जुलाई 2024

भारत के ऐतिहासिक ख़ज़ाने

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 मुख्य आलेख

2.1 **अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड 2024 :** भारत ने हासिल किया चौथा स्थान 16

2.2 **मानस हेल्पलाइन :** ड्रग्स के विरुद्ध निर्णायक युद्ध 38

2.3 **बुलंद रहे दहाड़ :** बाघ संरक्षण में भारत अग्रणी 44

03 संक्षेप में

3.1 गणित के माहिर : आईएमओ 2024 के मेधावी छात्र 18

3.2 चराईदेउ मैदाम : अहोम राजवंश का गौरवमय इतिहास 22

3.3 प्रोजेक्ट परी : लोक कला और लोक संस्कृति को मिल रहा बढ़ावा 28

3.4 एआई की मदद से हथकरघा उत्पाद हो रहे लोकप्रिय 34

3.5 बाघों के साथ सामंजस्य : भारत का प्रभावी संरक्षण प्रयास 48

3.6 हर घर तिरंगा : प्रेम और गौरव का प्रदर्शन 50

04 लेख/साक्षात्कार

4.1 65वाँ अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड - **कृष्णन शिवसुब्रमन्यन** 20

4.2 ऐतिहासिक जानकारियों का भंडार हैं मैदाम - **यदुबीर सिंह रावत** 24

4.3 समृद्ध संस्कृति की विरासत को विश्व संरक्षण - **डॉ. समुद्र गुप्ता कश्यप** 26

4.4 खादी क्रांति : प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 'विकसित भारत' की गारंटी - **मनोज कुमार** 36

4.5 भारत में ड्रग्स के खतरे एवं चुनौतियाँ - **बी एल वर्मा** 41

05 प्रतिक्रियाएँ 53

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो

'मन की बात' में आपका स्वागत है, अभिनंदन है। इस समय पूरी दुनिया में पेरिस ओलम्पिक छाया हुआ है। ओलम्पिक, हमारे खिलाड़ियों को विश्व पटल पर तिरंगा लहराने का मौका देता है, देश के लिए कुछ कर गुजरने का मौका देता है। आप भी अपने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाइए, Cheer for Bharat!!

साथियो, स्पोर्ट्स की दुनिया के इस ओलम्पिक से अलग, कुछ दिन पहले मैथ्स की दुनिया में भी एक ओलम्पिक हुआ है। इंटरनेशनल मैथेमैटिकल ओलम्पियाड। इस ओलम्पियाड में भारत के स्टूडेंट्स ने बहुत शानदार प्रदर्शन किया है। इसमें हमारी टीम ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए चार गोल्ड मेडल और एक सिल्वर मेडल जीता है। **इंटरनेशनल मैथेमैटिकल ओलम्पियाड, इसमें 100 से ज़्यादा देशों के युवा हिस्सा लेते हैं और ओवर ऑल टैली में हमारी टीम टॉप फाइव में आने में सफल रही है।** देश का नाम रोशन करने वाले इन स्टूडेंट्स के नाम हैं :

पुणे के रहने वाले आदित्य वेंकट गणेश, पुणे के ही सिद्धार्थ चोपरा, दिल्ली के अर्जुन गुप्ता, ग्रेटर नोएडा के कनव तलवार, मुम्बई के रुशील माथुर और गुवाहाटी के आनंदो भादुरी।

साथियो, आज 'मन की बात' में मैंने इन युवा विजेताओं को विशेष तौर पर आमंत्रित किया है। ये सभी इस समय फोन पर हमारे साथ जुड़े हुए हैं।

प्रधानमंत्री : नमस्ते साथियो। 'मन की बात' में आप सभी साथियों का बहुत-

बहुत स्वागत है। आप सभी कैसे हैं?

स्टूडेंट : हम ठीक हैं सर।

प्रधानमंत्री : अच्छा साथियो, 'मन की बात' के ज़रिए देशवासी आप सभी के एक्सपीरियंसेज़ जानने को बहुत उत्सुक हैं। मैं शुरुआत करता हूँ आदित्य और सिद्धार्थ से। आप लोग पुणे में हैं, सबसे पहले मैं आप से ही शुरू करता हूँ। ओलम्पियाड के दौरान आपने जो अनुभव किया, उसे हम सभी के साथ शेयर कीजिए।

आदित्य : मुझे मैथ्स में छोटे से इंटरेस्ट था। मुझे 6th स्टैंडर्ड मैथ्स ओमप्रकाश सर, मेरे टीचर ने सिखाया था और उन्होंने मेरे मैथ्स में इंटरेस्ट बढ़ाया था, मुझे सीखने मिला और मुझे अपॉर्चुनिटी मिला था।

IMO2024
65th International Mathematical Olympiad

प्रधानमंत्री : आपके साथी का क्या कहना है ?

सिद्धार्थ : सर, मैं सिद्धार्थ हूँ, मैं पुणे से हूँ। मैं अभी क्लास 12th पास किया हूँ। ये मेरा सेकेंड टाइम था IMO में, मुझे भी छोटे से बहुत इंटरेस्ट था मैथ्स में, और आदित्य के साथ जब मैं 6th में था, ओमप्रकाश सर ने हम दोनों को ट्रेन किया था और बहुत हेल्प हुआ था हमको और अभी मैं कॉलेज के लिए CMI जा रहा हूँ और मैथ्स एंड सीएस परस्यू कर रहा हूँ।

प्रधानमंत्री : अच्छा मुझे बताया गया है कि अर्जुन इस समय गाँधीनगर में हैं और कनव तो ग्रेटर नोएडा के ही हैं। अर्जुन और कनव, हमने ओलम्पियाड को लेकर जो चर्चा की, लेकिन आप दोनों हमें अपनी तैयारी से जुड़ा कोई विषय, और कोई विशेष अनुभव, अगर बताएँगे, तो हमारे श्रोताओं को अच्छा लगेगा।

अर्जुन : नमस्ते सर, जय हिन्द, मैं अर्जुन बोल रहा हूँ।

प्रधानमंत्री : जय हिन्द अर्जुन।

अर्जुन : मैं दिल्ली में रहता हूँ और मेरी मदर श्रीमती आशा गुप्ता फिजिक्स की प्रोफेसर हैं, दिल्ली यूनिवर्सिटी में और मेरे फादर श्री अमित गुप्ता चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं। मैं भी बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ कि मैं अपने देश के प्रधानमंत्री से बात कर रहा हूँ और सबसे पहले, मैं अपनी सफलता का श्रेय, अपने माता-पिता को देना चाहूँगा। **मुझे लगता है कि जब एक परिवार में कोई सदस्य एक ऐसे कम्पटीशन की तैयारी कर रहा होता है, तो केवल वो सदस्य का संघर्ष नहीं होता, पूरे परिवार का संघर्ष होता है।** असेन्शयली हमारे पास जो हमारा पेपर होते हैं, उसमें हमारे पास तीन प्रोब्लम्स के लिए साढ़े चार घंटे होते हैं, तो एक प्रोब्लम के लिए डेढ़ घंटा तो हम समझ सकते हैं कि कैसे हमारे पास एक प्रोब्लम को सॉल्व करने के लिए कितना

समय होता है ! तो हमें, घर पे, काफी मेहनत करनी पड़ती है। हमें प्रोब्लम के साथ घंटों लगाने पड़ते हैं, कभी-कभार तो एक-एक प्रोब्लम्स के साथ, एक दिन, या यहाँ तक कि 3 दिन भी लग जाते हैं, तो इसके लिए हमें ऑनलाइन प्रोब्लम्स ढूँढनी होती हैं। हम पिछले साल की प्रोब्लम ट्राई करते हैं और ऐसे ही, जैसे हम धीरे-धीरे मेहनत करते जाते हैं, उससे हमारा एक्सपीरियंस बढ़ता है, हमारी सब से जरूरी चीज़, हमारी प्रोब्लम सोल्विंग एबिलिटी बढ़ती है, जो, ना कि हमें मैथमेटिक्स में, बल्कि जीवन के हर एक क्षेत्र में मदद करती है।

प्रधानमंत्री : अच्छा मुझे कनव बता सकते हैं कि कोई विशेष अनुभव हो, ये सारी तैयारी में कोई खास, जो हमारे नौजवान साथियों को बड़ा अच्छा लगे जानकर के।

कनव तलवार : मेरा नाम कनव तलवार है, मैं ग्रेटर नोएडा उत्तर प्रदेश में रहता हूँ और कक्षा 11वीं का छात्र हूँ। मैथ्स मेरा पसंदीदा सब्जेक्ट है और मुझे बचपन से मैथ्स बहुत पसंद है। बचपन में मेरे पिता मुझे पज़ल्स कराते थे, जिससे मेरा इंटरेस्ट बढ़ता गया। मैंने ओलम्पियाड की तैयारी 7th क्लास से शुरू की थी। इसमें मेरी सिस्टर का बहुत बड़ा योगदान है और मेरे पेरेंट्स ने भी हमेशा मुझे सपोर्ट किया। ये ओलम्पियाड HBCSE कंडक्ट कराता है और ये एक 5 स्टेज प्रोसेस होता है। पिछले साल मेरा टीम में नहीं हुआ था और मैं काफी करीब था और ना होने पर बहुत दुखी था। तब **मेरे पेरेंट्स ने मुझे सिखाया कि या हम जीतते हैं या हम सीखते हैं और सफ़र मायने रखता है, सफलता नहीं, तो मैं यही कहना चाहता हूँ कि 'Love what you do and do what you love'। सफ़र मायने रखता है, सफलता नहीं और हमें सक्सेस मिलते रहेगा। अगर हम अपने सब्जेक्ट से प्यार करें और जर्नी को इंजॉय करें।**

प्रधानमंत्री : तो कनव आप तो

मैथमेटिक्स में भी इंटरेस्ट रखते हैं और बोलते हैं ऐसे, जैसे आपको साहित्य में भी रुचि है!

कनव तलवार : जी सर ! मैं बचपन में डिबेट्स और ओरेटिंग भी करता था।

प्रधानमंत्री : अच्छा, अब आइए हम आनंदो से बात करते हैं। आनंदो, आप अभी गुवाहाटी में हैं और आपका साथी रुशील आप मुम्बई में हैं। मेरा आप दोनों से एक क्वेश्चन है। देखिए, मैं 'परीक्षा पे चर्चा' तो करता ही रहता हूँ और 'परीक्षा पे चर्चा' के अलावा अन्य कार्यक्रमों में भी मैं स्टूडेंट्स से संवाद करता रहता हूँ। बहुत से छात्रों को मैथ्स से इतना डर लगता है, नाम सुनते ही घबरा जाते हैं। आप बताइए कि मैथ्स से दोस्ती कैसे की जाए।

रुशील माथुर : सर! मैं रुशील माथुर हूँ। जब हम छोटे होते हैं और हम पहली बार एडिशन सीखते हैं, हमें कैरी फॉरवर्ड समझाया जाता है, पर हमें कभी ये समझाया नहीं जाता कि कैरी फॉरवर्ड होता क्यों है? जब हम कम्पाउंड इंटरेस्ट पढ़ते हैं, हम ये क्वेश्चन कभी नहीं पूछते कि कम्पाउंड इंटरेस्ट का फॉर्मूला आता कहाँ से है ? मेरा मानना ये है कि **मैथ्स एक्चुली एक सोचने और प्रोब्लम सोल्विंग की एक कला है और इसलिए मुझे ये लगता है कि अगर हम सब मैथमेटिक्स में एक नया क्वेश्चन जोड़ दें, तो ये क्वेश्चन है कि हम ये क्यों कर रहे हैं ? ये ऐसा क्यों होता है ? तो आई थिंक इससे मैथ्स में बहुत इंटरेस्ट बढ़ सकता है, लोगों का,** क्योंकि जब किसी चीज को हम समझ नहीं पाते, उससे हमें डर लगने लगता है। इसके अलावा मुझे ये भी लगता है कि मैथ्स सब सोचते हैं कि एक बहुत लॉजिकल सा सब्जेक्ट है, पर इसके अलावा मैथ्स में बहुत क्रिएटिविटी भी इम्पोर्टेंट होती है, क्योंकि क्रिएटिविटी से ही हम out of the box solutions सोच पाते हैं, जो ओलम्पियाड में बहुत यूज़फुल होते हैं और इसलिए मैथ्स ओलम्पियाड का भी बहुत इम्पोर्टेंट रैलीवेंस है मैथ्स के इंटरेस्ट बढ़ाने के लिए।

प्रधानमंत्री : आनंदो कुछ कहना चाहेंगे!

आनंदो भादुरी : नमस्ते पीएम जी! मैं आनंदो भादुरी गुवाहाटी से। मैं अभी-अभी 12वीं कक्षा पास किया हूँ। यहाँ के लोकल ओलम्पियाड मैं 6th और 7th में करता था। वहाँ से रुचि हुई। ये मेरी दूसरी IMO थी। दोनों IMO बहुत अच्छे लगे। मैं रुशील जो था, उससे मैं सहमत हूँ और मैं ये भी कहना चाहूँगा कि जिन्हें मैथ्स से डर है, उन्हें धैर्य की बहुत ज़रूरत है, क्योंकि हमें मैथ्स जैसे पढ़ाया जाता है, क्या होता है, एक फॉर्मूला दिया जाता है, वो रटा जाता है, फिर उस फॉर्मूला से ही 100 (सौ) सवाल करने पड़ते हैं, लेकिन फॉर्मूला समझे कि नहीं, वो नहीं देखा जाता, सिर्फ़ सवाल करते जाओ, करते जाओ। फॉर्मूला भी रटा जाएगा और फिर एग्जाम में अगर फॉर्मूला भूल गया तो क्या करेगा? इसलिए मैं कहूँगा

कि फॉर्मूला को समझो, जो रुशील कहा था, फिर धैर्य से देखो! अगर फॉर्मूला ठीक से समझे तो 100 सवाल नहीं करने पड़ेंगे। एक-दो सवाल से ही हो जाएँगे और मैथ्स को डरना भी नहीं है।

प्रधानमंत्री : आदित्य और सिद्धार्थ, आप जब शुरू में बात कर रहे थे, तब ठीक से बात हो नहीं पाई, अब इन सारे साथियों को सुनने के बाद आपको भी ज़रूर लगता है कि आप भी कुछ कहना चाहते होंगे। क्या आप अपने अनुभव अच्छे ढंग से शेयर कर सकते हैं?

सिद्धार्थ : बहुत सारे दूसरे देशों से इंटरैक्ट किया था, बहुत सारे कल्चर थे और बहुत अच्छा था दूसरे स्टूडेंट्स से इंटरैक्ट कनेक्ट और बहुत सारे फेमस मैथेमेटिशियन थे।

प्रधानमंत्री : हाँ आदित्य।

आदित्य : बहुत अच्छा एक्सपीरियंस था और हमें उन्होंने बाथ सिटी को घुमा के दिखाया था और बहुत अच्छे-अच्छे व्यू दिखे थे, पार्क लेके गए थे और हमें आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी को भी लेके गए थे, तो वो एक बहुत अच्छा अनुभव था।

प्रधानमंत्री : चलिए साथियो, मुझे बहुत अच्छा लगा, आप लोगों से बात करके और मैं आपको बहुत-बहुत

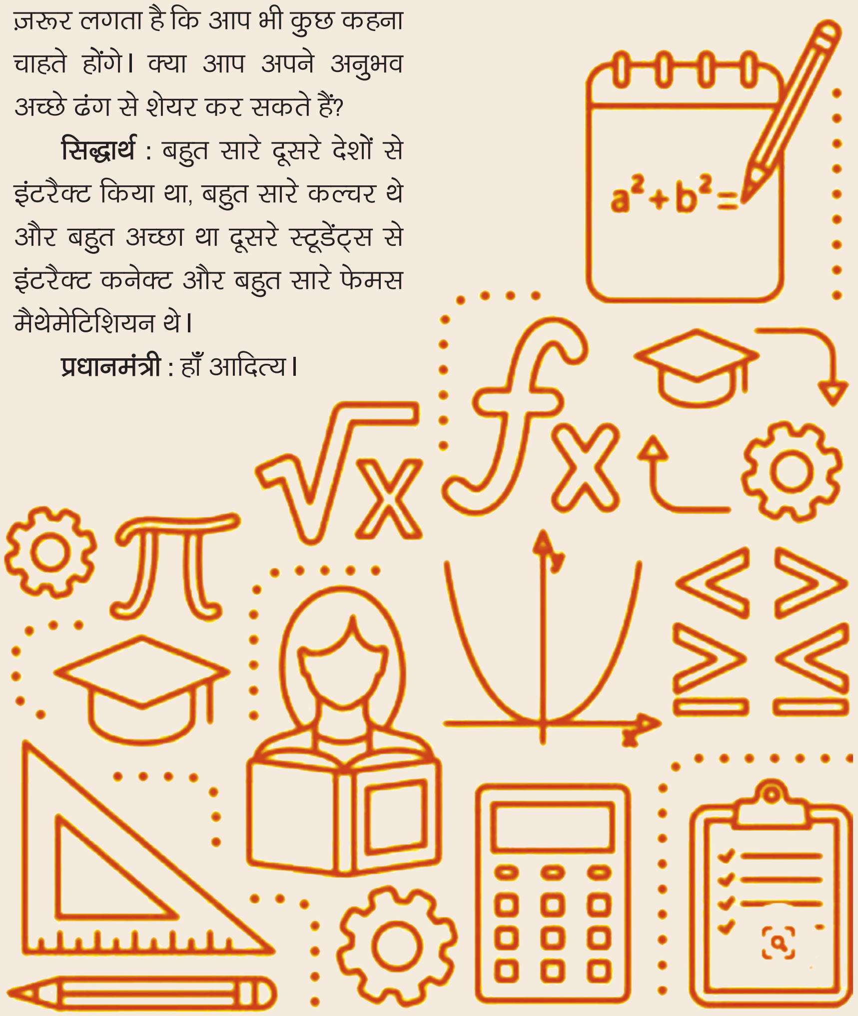

शुभकामनाएँ देता हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ इस प्रकार के खेल के लिए काफी फोकस एक्टीविटी करनी पड़ती है, दिमाग खपा देना पड़ता है और परिवार के लोग भी कभी-कभी तंग आते हैं– ये क्या गुणा-भाग, गुणा-भाग करता रहता है, लेकिन मेरी तरफ़ से आप को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं। आपने देश का मान बढ़ाया, नाम बढ़ाया है। धन्यवाद दोस्तो।

स्टूडेंट : थैंक यू, धन्यवाद।

प्रधानमंत्री : थैंक यू सर

स्टूडेंट : थैंक यू सर, जय हिन्द।

प्रधानमंत्री : जय हिन्द - जय हिन्द।

आप सभी स्टूडेंट्स से बात करके आनंद आ गया। 'मन की बात' से जुड़ने के लिए आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे विश्वास है कि मैथ्स के इन युवा महारथियों को सुनने के बाद, दूसरे युवाओं को मैथ्स को इंजॉय करने की प्रेरणा मिलेगी।

चराईदेउ मैदाम

पूर्वोत्तर भारत का पहला विश्व विरासत स्थल

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में, अब मैं उस विषय को साझा करना चाहता हूँ, जिसे सुनकर हर भारतवासी का सिर गर्व से ऊँचा हो जाएगा, लेकिन इसके बारे में बताने से पहले मैं आपसे एक सवाल करना चाहूँगा। क्या आपने चराईदेउ मैदाम का नाम सुना है? अगर नहीं सुना, तो अब आप ये नाम बार-बार सुनेंगे और बड़े उत्साह से दूसरों को बताएँगे। **असम के चराईदेउ मैदाम को यूनेस्को वर्ल्ड हैरिटेज साइट में शामिल किया जा रहा है। इस लिस्ट में यह भारत की 43वीं, लेकिन नॉर्थ-ईस्ट की पहली साइट होगी।**

साथियो, आपके मन में ये सवाल जरूर आ रहा होगा कि चराईदेउ मैदाम आखिर है क्या और ये इतना खास क्यों है। चराईदेउ का मतलब है shining city on the hills, यानी पहाड़ी पर एक चमकता शहर। ये अहोम राजवंश की पहली राजधानी थी। अहोम राजवंश के लोग अपने पूर्वजों के शव और उनकी कीमती चीजों को पारम्परिक रूप से

मैदाम में रखते थे। **मैदाम, टीलेनुमा एक ढाँचा होता है, जो ऊपर मिट्टी से ढका होता है और नीचे एक या उससे ज़्यादा कमरे होते हैं। ये मैदाम, अहोम साम्राज्य के दिवंगत राजाओं और गणमान्य लोगों के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है।** अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान प्रकट करने का ये तरीका बहुत यूनिक है। इस जगह पर सामुदायिक पूजा भी होती थी।

साथियो, अहोम साम्राज्य के बारे में दूसरी जानकारियाँ आपको और हैरान करेंगी। 13वीं शताब्दी से शुरू होकर ये साम्राज्य 19वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला। इतने लम्बे कालखंड तक एक साम्राज्य का बने रहना बहुत बड़ी बात है। शायद अहोम साम्राज्य के सिद्धांत और विश्वास इतने मज़बूत थे कि उसने इस राजवंश को इतने समय तक कायम रखा। **मुझे याद है कि इसी वर्ष 9 मार्च को मुझे अदम्य साहस और शौर्य के प्रतीक, महान अहोम योद्धा लचित बोरफुकन की सबसे ऊँची प्रतिमा के अनावरण का सौभाग्य मिला था।** इस कार्यक्रम के दौरान, अहोम समुदाय की आध्यात्मिक परम्परा का पालन करते हुए मुझे अलग ही अनुभव हुआ था। लसित मैदाम में अहोम समुदाय के पूर्वजों को सम्मान देने का सौभाग्य मिलना मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। अब चराईदेउ मैदाम के वर्ल्ड हैरिटेज साइट बनने का मतलब होगा कि यहाँ पर और अधिक पर्यटक आएँगे। आप भी भविष्य के अपने ट्रेवल प्लान्स में इस साइट को जरूर शामिल करिएगा।

परियोजना परी

सार्वजनिक स्थानों का सौंदर्यीकरण

साथियो, अपनी संस्कृति पर गौरव करते हुए ही कोई देश आगे बढ़ सकता है। भारत में भी इस तरह के बहुत सारे प्रयास हो रहे हैं। ऐसा ही एक प्रयास है– प्रोजेक्ट PARI... अब आप परी सुनकर कन्फ्यूज मत होइएगा। ये परी स्वर्गीय कल्पना से नहीं जुड़ी, बल्कि धरती को स्वर्ग बना रही है। PARI यानी पब्लिक आर्ट ऑफ इंडिया। **प्रोजेक्ट PARI, पब्लिक आर्ट को लोकप्रिय बनाने के**

लिए उभरते कलाकारों को एक मंच पर लाने का बड़ा माध्यम बन रहा है। आप देखते होंगे.. सड़कों के किनारे, दीवारों पर, अंडरपास में बहुत ही सुंदर पेंटिंग्स बनी हुई दिखती हैं। ये पेंटिंग्स और ये कलाकृतियाँ यही कलाकार बनाते हैं, जो PARI से जुड़े हैं। इससे जहाँ हमारे सार्वजनिक स्थानों की सुंदरता बढ़ती है, वहीं हमारे कल्चर को और ज़्यादा पोपुलर बनाने में भी मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, दिल्ली के भारत मंडपम को ही लीजिए। यहाँ देश भर के अद्भुत आर्ट वर्क्स आपको देखने को मिल जाएँगे। दिल्ली में कुछ अंडरपास और फ्लाईओवर पर भी आप ऐसे खूबसूरत पब्लिक आर्ट देख सकते हैं। **मैं कला और संस्कृति प्रेमियों से आग्रह करूँगा कि वे भी पब्लिक आर्ट पर और काम करें। ये हमें अपनी जड़ों पर गर्व करने की सुखद अनुभूति देगा।**

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में, अब बात 'रंगों की', ऐसे रंगों की, जिन्होंने हरियाणा के रोहतक ज़िले की ढाई-सौ से ज़्यादा महिलाओं के जीवन में समृद्धि के रंग भर दिए हैं। हथकरघा उद्योग से जुड़ी ये महिलाएँ पहले छोटी-छोटी दुकानें और छोटे-मोटे काम कर गुज़ारा करती थीं, लेकिन हर किसी में आगे बढ़ने की इच्छा तो होती ही होती है। इसलिए इन्होंने 'उन्नति सेल्फ हेल्प ग्रुप' से जुड़ने का फैसला किया और इस ग्रुप से जुड़कर उन्होंने ब्लॉक पेंटिंग और रंगाई में ट्रेनिंग हासिल की। कपड़ों पर रंगों का जादू बिखेरने वाली ये महिलाएँ आज लाखों रुपए कमा रही हैं। इनके बनाए बेड कवर, साड़ियाँ और दुपट्टों की बाजार में भारी माँग है।

साथियो, रोहतक की इन महिलाओं की तरह देश के अलग-अलग हिस्सों में कारीगर, हैंडलूम को लोकप्रिय बनाने में जुटी हैं। चाहे ओडिशा की 'सम्बलपुरी साड़ी' हो, चाहे MP की 'माहेश्वरी साड़ी' हो, महाराष्ट्र की 'पैठणी' या विदर्भ के 'हैंड ब्लॉक प्रिंट्स' हों, चाहे हिमाचल के 'भूट्टिको' के शॉल और ऊनी कपड़े हों, या फिर, जम्मू-कश्मीर के 'कनि' शॉल हों। देश के कोने-कोने में हैंडलूम कारीगरों का काम छाया हुआ है और आप ये तो जानते ही होंगे, कुछ ही दिन बाद 7 अगस्त

हाथों का हुनर, AI का साथ

हैंडलूम उत्पादों को मिली नई उड़ान

को हम 'नेशनल हैंडलूम डे' मनाएँगे। **आजकल, जिस तरह हैंडलूम उत्पादों ने लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाई है, वो वाकई बहुत सफल है, जबरदस्त है। अब तो कई निजी कम्पनियाँ भी AI के माध्यम से हैंडलूम उत्पाद और सस्टेनेबल फैशन को बढ़ावा दे रही हैं।** कोशा AI, हैंडलूम इंडिया, डी-जंक, नोवाटैक्स, ब्रह्मापुत्र फैबल्स, ऐसे कितने ही स्टार्टअप भी हैंडलूम उत्पादों को लोकप्रिय बनाने में जुटे हैं। मुझे ये देखकर भी अच्छा लगा कि बहुत से लोग अपने यहाँ के ऐसे लोकल प्रोडक्ट्स को पोपुलर बनाने में जुटे हैं। आप भी अपने लोकल प्रोडक्ट्स को #MyProductMyPride के नाम से सोशल मीडिया पर अपलोड करें। आपका ये छोटा-सा प्रयास अनेकों लोगों की ज़िन्दगी बदल देगा।

साथियो, हैंडलूम के साथ-साथ मैं खादी की बात भी करना चाहूँगा। आप में से ऐसे कई लोग होंगे, जो पहले कभी खादी के उत्पादों का उपयोग नहीं करते थे, लेकिन आज बड़े गर्व से खादी पहनते हैं। **मुझे ये बताते हुए भी आनंद आ रहा है– खादी ग्रामोद्योग का कारोबार पहली बार डेढ़ लाख करोड़ रुपए के पार पहुँच गया है।** सोचिए, डेढ़ लाख करोड़ रुपए !! और जानते हैं खादी की बिक्री कितनी बढ़ी है ? 400% (परसेंट)। खादी की, हैंडलूम की, ये बढ़ती हुई बिक्री बड़ी संख्या में रोज़गार के नए अवसर भी बना रही है। इस इंडस्ट्री से सबसे ज़्यादा महिलाएँ जुड़ी हैं, तो सबसे ज़्यादा फायदा भी उन्हीं को हो रहा है। मेरा तो आपसे फिर एक आग्रह है, आपके पास भाँति-भाँति के वस्त्र होंगे और आपने अब तक खादी के वस्त्र नहीं खरीदे, तो इस साल से शुरू कर लें। अगस्त का महीना आ ही गया है। ये आज़ादी मिलने का महीना है, क्रांति का महीना है। इससे बढ़िया अवसर और क्या होगा– खादी खरीदने के लिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात'

में मैंने अक्सर आपसे ड्रग्स की चुनौती की चर्चा की है। **हर परिवार की ये चिंता होती है कि कहीं उनका बच्चा ड्रग्स की चपेट में ना आ जाए। अब ऐसे लोगों की मदद के लिए सरकार ने एक विशेष केंद्र खोला है, जिसका नाम है– 'मानस'।** ड्रग्स के खिलाफ़ लड़ाई में ये बहुत बड़ा कदम है। कुछ दिन पहले ही 'मानस' की हेल्पलाइन और पोर्टल को लॉन्च किया गया है। **सरकार ने एक टोल फ्री नम्बर '1933' जारी किया है। इस पर कॉल करके कोई भी ज़रूरी सलाह ले सकता है या फिर रिहैबिलिटेशन से जुड़ी जानकारी ले सकता है।** अगर किसी के पास ड्रग्स से जुड़ी कोई दूसरी जानकारी भी है, तो वो इसी नम्बर पर कॉल करके 'नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो' के साथ साझा भी कर सकते हैं। 'मानस' के साथ साझा की गई हर जानकारी गोपनीय रखी जाती है। भारत को 'ड्रग्स फ्री' बनाने में जुटे सभी लोगों से, सभी परिवारों से, सभी संस्थाओं से मेरा आग्रह है कि 'MANAS' हेल्पलाइन का भरपूर उपयोग करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, कल दुनियाभर में टाइगर डे मनाया जाएगा। भारत में तो टाइगर्स 'बाघ', हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। हम सब बाघों से जुड़े किस्से-कहानियाँ सुनते हुए ही बड़े हुए हैं। जंगल के आस-पास के गाँव में तो हर किसी को पता होता है कि बाघ के साथ तालमेल बिठाकर कैसे रहना है। **हमारे देश में ऐसे कई गाँव है, जहाँ इंसान और बाघ के बीच कभी टकराव की स्थिति नहीं आती, लेकिन जहाँ ऐसी स्थिति आती है, वहाँ भी बाघों के संरक्षण के लिए अभूतपूर्व प्रयास हो रहे हैं। जन-भागीदारी का ऐसा ही एक प्रयास है 'कुल्हाड़ी बंद पंचायत'।** राजस्थान के रणथम्भौर से शुरू हुआ 'कुल्हाड़ी बंद पंचायत' अभियान बहुत दिलचस्प है। स्थानीय समुदायों ने स्वयं इस बात की शपथ ली है कि जंगल में कुल्हाड़ी के साथ नहीं जाएँगे और पेड़ नहीं काटेंगे। इस एक फैसले से यहाँ के जंगल एक बार फिर से हरे-भरे हो रहे हैं और बाघों के लिए बेहतर वातावरण तैयार हो रहा है।

साथियो, महाराष्ट्र का ताडोबा - अंधारी - टाइगर - रिज़र्व बाघों के प्रमुख

Narcotics Control Bureau

MANAS

मादक पदार्थ निषेध आसूचना केंद्र

National Narcotics Helpline

बसेरों में से एक है। यहाँ के स्थानीय समुदायों, विशेषकर गोंड और माना जनजाति के हमारे भाई-बहनों ने इको-टूरिज़्म की ओर तेज़ी से कदम बढ़ाए हैं। उन्होंने जंगल पर अपनी निर्भरता को कम किया है ताकि यहाँ बाघों की गतिविधियाँ बढ़ सकें। आपको आंध्र प्रदेश में नल्लामलाई की पहाड़ियों पर रहने वाले 'चेंचू' जनजाति के प्रयास भी हैरान कर देंगे। उन्होंने टाइगर ट्रैकर्स के तौर पर जंगल में वन्य जीवों के मूवमेंट की हर जानकारी जमा की। इसके साथ ही वे क्षेत्र में अवैध गतिविधियों की निगरानी भी करते रहे हैं। इसी तरह उत्तर प्रदेश के पीलीभीत में चल रहा 'बाघ मित्र कार्यक्रम' भी बहुत चर्चा में है। इसके तहत स्थानीय लोगों को 'बाघ मित्र' के रूप में काम करने की ट्रेनिंग दी जाती है। ये 'बाघ मित्र' इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि बाघों और इंसानों के बीच टकराव की स्थिति ना बने। देश के अलग-अलग हिस्सों में इस तरह के कई प्रयास जारी हैं। मैंने यहाँ कुछ ही प्रयासों की चर्चा की है, लेकिन मुझे खुशी है कि जन-भागीदारी बाघों के संरक्षण में बहुत काम आ रही है। ऐसे प्रयासों की वजह से ही भारत में बाघों की आबादी हर साल बढ़ रही है। **आपको ये जानकर खुशी और गर्व का अनुभव होगा कि दुनियाभर में जितने बाघ हैं, उनमें से 70 प्रतिशत बाघ हमारे देश में हैं।** सोचिए! 70 प्रतिशत बाघ!! तभी तो हमारे देश के अलग-अलग हिस्सों में कई टाइगर सैंक्चुएरीज़ हैं।

साथियो, बाघ बढ़ने के साथ-साथ हमारे देश में वन क्षेत्र भी तेज़ी से बढ़ रहा है। इसमें भी सामुदायिक प्रयासों से बड़ी सफलता मिल रही है। पिछले 'मन की बात' कार्यक्रम में आपसे 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम की चर्चा की थी। मुझे खुशी है कि देश के अलग-अलग हिस्सों में बड़ी संख्या में लोग इस अभियान से जुड़ रहे हैं। अभी कुछ दिन पहले स्वच्छता के लिए प्रसिद्ध इंदौर में

एक शानदार कार्यक्रम हुआ। यहाँ **'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम के दौरान एक ही दिन में 2 लाख से ज़्यादा पौधे लगाए गए। अपनी माँ के नाम पर पेड़ लगाने के इस अभियान से आप भी ज़रूर जुड़ें और सेल्फी लेकर सोशल मीडिया पर भी पोस्ट करें। इस अभियान से जुड़कर आपको अपनी माँ और धरती माँ, दोनों के लिए कुछ स्पेशल कर पाने का एहसास होगा।**

मेरे प्यारे देशवासियो, 15 अगस्त का दिन अब दूर नहीं है और अब तो 15 अगस्त के साथ एक और अभियान जुड़ गया है, 'हर घर तिरंगा अभियान'। पिछले कुछ वर्षों से तो पूरे देश में 'हर घर तिरंगा अभियान' के लिए सबका जोश हाई रहता है। ग़रीब हो, अमीर हो, छोटा घर हो, बड़ा घर हो, हर कोई तिरंगा लहराकर गर्व का अनुभव करता है। तिरंगे के साथ सेल्फ़ी लेकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करने का क्रेज़ भी दिखता है। आपने गौर किया होगा, जब कॉलोनी या सोसाइटी के एक-एक घर पर तिरंगा लहराता है, तो देखते-ही-देखते दूसरे घरों पर भी तिरंगा दिखने लगता है यानी **'हर घर तिरंगा अभियान' – तिरंगे की शान में एक यूनिक फेस्टीवल बन चुका है। इसे लेकर अब तो तरह-तरह के इनोवेशन भी होने लगे हैं।** 15 अगस्त आते-आते, घर में, दफ़्तर में, कार में, तिरंगा लगाने के लिए तरह-तरह के प्रोडक्ट्स दिखने लगते हैं। कुछ लोग तो 'तिरंगा' अपने दोस्तों, पड़ोसियों को बाँटते भी हैं। तिरंगे को लेकर ये उल्लास, ये उमंग हमें एक-दूसरे से जोड़ती है।

साथियो, पहले की तरह इस साल भी आप 'harghartiranga.com' पर तिरंगे के साथ अपनी सेल्फ़ी ज़रूर अपलोड करेंगे और मैं आपको एक और बात याद दिलाना चाहता हूँ। हर साल 15 अगस्त से पहले आप मुझे अपने ढेर सारे सुझाव भेजते हैं। आप इस साल भी मुझे अपने सुझाव ज़रूर भेजिए। आप MyGov या NaMo App पर भी अपने सुझाव भेज सकते हैं। मैं ज़्यादा-से-ज़्यादा सुझावों को 15 अगस्त के सम्बोधन में कवर करने की कोशिश करूँगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' के इस एपिसोड में आपसे जुड़कर बहुत अच्छा लगा। अगली बार फिर मिलेंगे, देश की नई उपलब्धियों के साथ। जनभागीदारी के नए प्रयासों के साथ, आप, 'मन की बात' के लिए अपने सुझाव ज़रूर भेजते रहें। आने वाले समय में अनेक पर्व भी आ रहे हैं। आपको सभी पर्वों की ढेर सारी शुभकामनाएँ। आप अपने परिवार के साथ मिलकर त्योहारों का आनंद उठाएँ। देश के लिए कुछ-न-कुछ नया करने की ऊर्जा निरंतर बनाए रखें। बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

हर घर-आँगन में फिर लहराया तिरंगा

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड 2024

भारत ने हासिल किया चौथा स्थान

“इस ओलम्पियाड में भारत के विद्यार्थियों ने बहुत शानदार प्रदर्शन किया है। इसमें हमारी टीम ने चार गोल्ड मेडल और एक सिल्वर मेडल जीता। इंटरनेशनल मैथेमैटिकल ओलम्पियाड में 100 से अधिक देशों के युवा हिस्सा लेते हैं और ओवरऑल टैली में हमारी टीम टॉप फाइव में पहुँचने में सफल रही है।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

भारत के छह विद्यार्थियों की टीम ने बौद्धिक उत्कृष्टता के प्रेरक प्रदर्शन और गणित में भारत की समृद्ध ऐतिहासिक परम्परा को जारी रखते हुए, अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड 2024 में देश की अब तक की सर्वोच्च रैंक हासिल करके इतिहास रचा है। ब्रिटेन के बाथ में आयोजित इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में भारत ने वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली चौथा स्थान हासिल किया।

भारत की छह सदस्यीय टीम ने असाधारण कौशल का प्रदर्शन करते हुए चार स्वर्ण पदक, एक रजत पदक और एक सम्मानजनक उल्लेख अर्जित किया। आदित्य मंगुडी (पुणे), आनंदो भादुरी (गुवाहाटी), कनव तलवार (नोएडा) और रुशील माथुर (मुम्बई) को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। अर्जुन गुप्ता (दिल्ली) ने रजत पदक हासिल किया और सिद्धार्थ चोपड़ा (पुणे) को सम्मानजनक उल्लेख मिला।

भारत एक ऐसा देश है, जिसने गणित की आधारशिला रखी। गणितीय नवाचार का उसका समृद्ध इतिहास है। उल्लेखनीय गणितज्ञों में शामिल हैं– आर्यभट्ट, जिन्होंने शून्य और स्थानीय मान प्रणाली की शुरुआत की; रामानुजन, जो संख्या सिद्धान्त, अनंत शृंखला और निरंतर भिन्न अंकों में अपने अभूतपूर्व योगदान के लिए जाने जाते हैं और भास्कर द्वितीय, जो बीजगणित, गणना और अन्य क्षेत्रों में अपने काम के लिए जाने जाते हैं। अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड 2024 टीम की सफलता आज के समय में भारत की गणितीय शिक्षा की निरंतर ताकत और भविष्य की उपलब्धियों की क्षमता को रेखांकित करती है। 1989 से लेकर अब तक का यह भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। इस प्रतियोगिता में भारत ने अब तक के सर्वाधिक स्वर्ण पदक और उच्चतम रैंक हासिल किया है। भारत ने प्रतियोगिता में 167 अंक हासिल किए। इसमें 108 देशों के कुल 609 विद्यार्थियों– 528 छात्र और 81 छात्राओं ने भाग लिया।

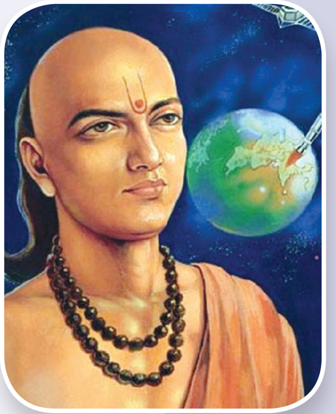

आईएमओ 2024 में भारत के शानदार प्रदर्शन पर खुशी जाहिर करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि यह उपलब्धि राष्ट्रीय विजय का प्रतीक है और भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है। उन्होंने टीम को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि कई अन्य युवाओं को प्रेरित करेगी और गणित को और भी लोकप्रिय बनाने में मदद करेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी विद्यार्थियों में समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए भारतीय शैक्षणिक क्षेत्र में परिवर्तनकारी बदलाव किए हैं। यह नीति रटने से सीखने की तुलना में तार्किक तर्क पर ज़ोर देते हुए गणितज्ञों और नवप्रवर्तकों की अगली पीढ़ी को सक्षम करने के लिए तैयार है। गणितीय अवधारणाओं को व्यावहारिक अनुप्रयोगों के साथ एकीकृत करके और अंतःविषय सीखने को प्रोत्साहित करके, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य युवा प्रतिभाओं का पोषण करना है, जो अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड जैसी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं। यह नीति कला, विज्ञान, पाठ्यक्रम तथा पाठ्येतर गतिविधियों और व्यावसायिक तथा शैक्षणिक धाराओं के बीच पारम्परिक बाधाओं को तोड़ती है और विद्यार्थियों को सफल भविष्य के लिए तैयार करती है।

अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड 2024 में भारत की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ वास्तव में देश की समृद्ध गणितीय विरासत और इसके शैक्षिक ढाँचे की बढ़ती ताकत का प्रतिबिम्ब हैं।

“इंटरनेट की अच्छी पहुँच के साथ, अन्य देशों के पिछले ओलम्पियाड पेपर और पिछले अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड पेपर आसानी से उपलब्ध हैं। इन्हें हल करने से टीम को अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड पेपर की सामान्य कठिनता का कुछ अंदाजा हो गया।”

-कृष्णन शिवसुब्रमन्यन
प्रोफेसर, गणित विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई

गणित के माहिर

आईएमओ 2024 के मेधावी छात्र

'मन की बात' के 112वें एपिसोड में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड, 2024 में भाग लेने वाली भारतीय टीम के प्रयास की सराहना की। पुणे से आदित्य वेंकट गणेश और सिद्धार्थ चोपड़ा, दिल्ली से अर्जुन गुप्ता, ग्रेटर नोएडा से कनव तलवार, मुम्बई से रुशील माथुर और गुवाहाटी से आनंदो भादुरी की छह सदस्यीय टीम ने चार स्वर्ण पदक, एक रजत पदक और एक सम्माननीय प्रशस्ति पत्र हासिल किया।

गणित के इन प्रतिभाशाली लोगों ने अपने अनुभव साझा किए और देश भर में उन्हें मिल रही मान्यता और सराहना को लेकर प्रसन्नता व्यक्त की। अपनी उल्लेखनीय यात्रा को ध्यान में रखते हुए उन्होंने दूरदर्शन समाचार टीम से बात की।

"अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलंपियाड में भारत का प्रतिनिधित्व करना एक बड़ा सम्मान था। मेरे शिक्षक, ओम प्रकाश सर ने मेरी यात्रा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने सिद्धार्थ और मुझे कक्षा छह से ही मार्गदर्शन देना शुरू कर दिया था। 'मन की बात' के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ हमारी बातचीत एक बेहतरीन अनुभव था। यह अत्यधिक प्रेरक था और उनका प्रोत्साहन हमारे लिए बहुत मायने रखता है।"

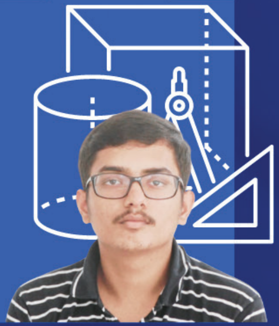

–आदित्य वेंकट गणेश, पुणे

"आईएमओ में यह मेरा दूसरा मौका था। मुझे भी बचपन से ही गणित में रुचि थी। जब मैं आदित्य के साथ छठी कक्षा में था, तो ओम प्रकाश सर ने हम दोनों को प्रशिक्षित किया। उन्होंने हमारी बहुत मदद की। हमें इस कार्यक्रम में विभिन्न देशों के छात्रों से बातचीत करने का अवसर मिला, जिनमें से प्रत्येक अपनी अनूठी संस्कृति लेकर आए थे।"

–सिद्धार्थ चोपड़ा, पुणे

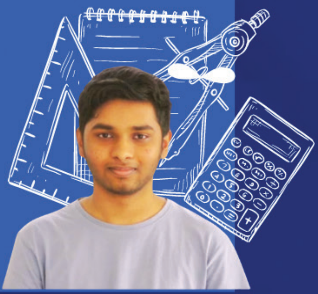

"मेरा मानना है कि गणित ओलम्पियाड को और अधिक मान्यता मिलना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि गणित अक्सर लोगों को डराता है। हाल ही में 'मन की बात' एपिसोड में प्रधानमंत्री के साथ बात करना अविश्वसनीय रूप से एक विनम्र अनुभव रहा। यह कुछ ऐसा लगा जिसकी मैं कुछ साल पहले कल्पना भी नहीं कर सकता था। इन ओलम्पियाड के बारे में जागरूकता बढ़ाने और गणित में अधिक रुचि जगाने से अधिक लोग इस विषय को आगे बढ़ाएँगे। मैं इस अवसर के लिए बहुत आभारी हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि यह भविष्य में और अधिक लोगों को गणित से जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा।"

–रुशील माथुर, मुम्बई

"मेरी तैयारी के दौरान मेरे माता-पिता ने मेरा भरपूर साथ दिया। प्रधानमंत्री की बदौलत जागरूकता बढ़ने से, भारत को वैश्विक स्तर पर बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिल रही है। इसके परिणामस्वरूप भविष्य में और अधिक सम्मान प्राप्त करने में भी मदद मिलेगी। मेरा मानना है कि जो कोई भी 'मन की बात' के इस संस्करण को देखेगा, वह गणित को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित महसूस करेगा। जब लोग देखेंगे कि हर कौशल को प्रोत्साहित किया जा रहा है, तो इससे उत्साह बढ़ेगा और देश के युवाओं को बहुत प्रेरणा मिलेगी।"

–अर्जुन गुप्ता, नई दिल्ली

"हमें जो मान-सम्मान मिला, उससे हम वास्तव में गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। हमारे गुरु भी उतने ही रोमांचित हैं। हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रोत्साहन के लिए विशेष रूप से आभारी हैं। X (पूर्व में ट्विटर) पर उनकी शुभकामनाओं ने हमें महत्त्वपूर्ण पहचान दिलाई, इससे हमें और अधिक प्रसन्नता हुई।"

–आनंदो भादुरी, गुवाहाटी

"मुझे बचपन से ही गणित का शौक रहा है। मेरे पिता मुझे पहेलियाँ सुनाते थे। इससे मेरी रुचि और गहरी हुई। मैंने 7वीं कक्षा में ओलम्पियाड की तैयारी शुरू कर दी थी। पिछले साल मैं टीम में जगह बनाने से चूक गया था, लेकिन मेरे माता-पिता ने मुझे सिखाया कि यह सिर्फ़ जीतने के बारे में नहीं है, बल्कि सीखने और यात्रा को महत्त्व देने के बारे में भी है। या तो हम जीतते हैं, या हम सीखते हैं। इसलिए, मेरी सलाह यही होगी कि आप जो करते हैं, उससे प्यार करें और जो आपको पसंद है, उसे करें।"

–कनव तलवार, ग्रेटर नोएडा

65वाँ अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड

उत्कृष्टता की ओर बढ़ रहे हैं बच्चे

कृष्णन शिवसुब्रमन्यन
प्रोफेसर, गणित विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई

65वाँ अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड 11 जुलाई, 2024 से 22 जुलाई, 2024 तक ब्रिटेन के बाथ में आयोजित किया गया था। भारतीय दल में छह प्रतियोगी (आदित्य मंगुडी वेंकट गणेश, आनंदो भादुरी, अर्जुन गुप्ता, कनव तलवार, रुशील माथुर और सिद्धार्थ चोपड़ा) थे। उनके साथ टीम लीडर के नाते मैं डिप्टी टीम लीडर डॉ. रिजुल सैनी (एचबीसीएसई), 'ऑब्जर्वर ए' श्री रोहन गोयल (सीएमआई, जो एमआईटी में पीएचडी करेंगे) और 'ऑब्जर्वर बी' डॉ. मैनाक घोष (आईएसआई बेंगलुरु) भी थे।

भारतीय टीम ने 4 स्वर्ण (आदित्य, आनंदो, कनव और रुशील), 1 रजत (अर्जुन) और 1 सम्माननीय उल्लेख (सिद्धार्थ) जीता। भारतीय टीम 108 देशों में अमरीका, चीन और दक्षिण कोरिया के बाद चौथे स्थान पर थी। भारत का यह, अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय गणित ओलम्पियाड - प्रशिक्षण शिविर, 07 से 31 मई, 2024 तक चेन्नई गणितीय संस्थान में आयोजित किया गया था। इसमें छह प्रतिभागियों का चयन किया गया और भारतीय अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड टीम का गठन किया गया। इस टीम के लिए 1 से 14 जुलाई तक एचबीसीएसई में प्री-डिपार्चर कैम्प आयोजित किया गया था। इन दोनों शिविरों के संयोजक भारत में गणितीय ओलम्पियाड कार्यक्रम के राष्ट्रीय समन्वयक प्रोफेसर पृथ्वीजीत डे (एचबीसीएसई से) थे।

हमारे विद्यार्थियों ने अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड प्रशिक्षण कैम्प–आईएमओटीसी में पढ़ाई के दौरान कड़ी मेहनत की। चूँकि यह एक व्यक्तिगत प्रतियोगिता है (विद्यार्थी परीक्षा में आपस में चर्चा नहीं कर सकते)। अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड प्रशिक्षण कैम्प और प्री-डिपार्चर कैम्प में चर्चा के दौरान, टीम सदस्यों ने एक-दूसरे को जाना और समस्याओं को हल करने की दिशा में एक-दूसरे के विचारों पर तत्परता से काम किया। इसने टीम को एक इकाई के रूप में 'एकजुट' करने में योगदान दिया। संसाधन व्यक्तियों के रूप में डॉ. रिजुल सैनी, डॉ. मैनाक घोष, श्री रोहन गोयल और अन्य पिछले प्रतियोगियों ने रोल मॉडल की तरह कक्षाओं में टीम की मदद की, जिससे उनका समग्र आत्मविश्वास बढ़ा। शाम को आउटडोर गेम और प्रतिदिन रात्रिभोज के बाद इनडोर बोर्ड गेम ने तनाव को कम करने में मदद की और उनके दिमाग को तरोताजा रखा। तकनीकों और समस्या समाधान सत्रों को कवर करने वाली कक्षाओं ने टीम की तैयारी पर ध्यान केन्द्रित रखा। इंटरनेट की अच्छी पहुँच के साथ, अन्य देशों के पिछले ओलम्पियाड पेपर और पिछले अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड पेपर आसानी से उपलब्ध हैं। इन्हें हल करने से टीम को अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड पेपर की सामान्य कठिनता का कुछ अंदाजा हो गया।

पहली बार टीम लीडर के रूप में, अन्य सभी देशों के टीम लीडरों के साथ पेपर चुनने की जूरी प्रक्रिया का मेरा अनुभव बहुत यादगार रहा। 'समस्या चयन समिति' में कई शीर्ष गणितज्ञ शामिल थे, जिनके साथ बातचीत करना और इस प्रक्रिया में नए दोस्त बनाना दिलचस्प था। कई देशों ने अपने राष्ट्रीय ओलम्पियाड के पेपर या तो प्रश्नपत्र के रूप में या पेन-ड्राइव में दिए। इससे जूरी सदस्यों के बीच स्वस्थ कार्य सम्बंध बनाने में मदद मिली। अंतिम समन्वय प्रक्रिया गहन और अच्छी तरह से समन्वित थी।

अंतरराष्ट्रीय गणितीय ओलम्पियाड में तीन फील्ड मेडलिस्ट (प्रो. टिमोथी गॉवर्स, प्रो. टेरेंस ताओ और प्रो. मैरीना वियाजोव्स्का) मौजूद थे और विद्यार्थी, ऑक्सफोर्ड में चौथे फील्ड मेडलिस्ट (प्रो. जेम्स मेनार्ड) से मिल सकते थे। उनकी उपस्थिति, विशेषकर युवा टीम के सदस्यों के लिए उत्कृष्टता पर ध्यान केन्द्रित करने और उनके दृढ़ संकल्प को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण रही है।

गणितीय रूप से इस अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम और हमारे उत्साहजनक परिणाम को देखते हुए, हम पूरी निष्ठा से आशा करते हैं कि युवा विद्यार्थी, गणित के अपने रुचि वाले हिस्सों में 'उत्कृष्टता' प्राप्त करने की दिशा में स्वयं को तैयार करेंगे और इस के लिए पूरे प्रयास करेंगे।

चराईदेउ मैदाम

अहोम राजवंश का गौरवमय इतिहास

"असम के चराईदेउ मैदाम को यूनेस्को के विश्व विरासत स्थलों में शामिल किया जा रहा है। इस लिस्ट में यह भारत की 43वीं, लेकिन नॉर्थ-ईस्ट की पहली साइट होगी। अहोम राजवंश के लोग अपने पूर्वजों के शव और उनकी कीमती चीज़ों को पारम्परिक रूप से मैदाम में रखते थे।"

('मन की बात' सम्बोधन में)

असम के हरे-भरे परिदृश्यों के बीच बसा एक अनूठा शहर चराईदेउ इतिहास, संस्कृति और स्थापत्य कला के चमत्कारों का भंडार है। यहीं पर भारत के सबसे स्थायी और प्रभावशाली साम्राज्यों में से एक अहोम राजवंश की गाथा मार्मिक आख्यान के साथ सामने आती है। इस ऐतिहासिक ताने-बाने का केंद्र चराईदेउ मैदाम में है, जो अहोम राजाओं और रानियों की भव्यता और विरासत का प्रमाण है।

अहोम समुदाय के शासन में छह शताब्दियों से अधिक समय तक साम्राज्यों का उत्थान और पतन, विविध संस्कृतियों का मिलन और एक अद्वितीय सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य का विकास हुआ। उनकी पहली राजधानी– चराईदेउ सत्ता के परिवर्तन के बाद भी एक पवित्र और प्रतीकात्मक केंद्र बना रहा।

मैदाम, अहोम राजघराने के शवगृह ही नहीं, स्मारक और गौरव हैं। सावधानीपूर्वक बनाए गए ये शवगृह अहोम कारीगरों के कौशल और कलात्मकता का प्रमाण हैं। मैदाम का निर्माण एक जटिल अनुष्ठान होता था। इसमें विस्तृत समारोह और पूरे राज्य की भागीदारी शामिल थी। अहोम के अंतिम संस्कारों से जुड़े रीति-रिवाज़ उनकी अनूठी सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं।

मैदाम महज शवगृह नहीं हैं। वे इतिहास और संस्कृति के भंडार हैं। इनमें पाई जाने वाली जटिल नक्काशी, मूर्तियाँ और कलाकृतियाँ अहोम जीवन शैली, उनकी धार्मिक मान्यताओं और उनकी कलात्मक संवेदनाओं के बारे में अमूल्य जानकारी प्रदान करती हैं। ऐसे अहोम लोगों के लिए मैदाम एक महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थल भी हैं, जो अपने पूर्वजों का सम्मान करते हैं और अपने पूर्वजों की परम्पराओं को कायम रखते हैं।

चराईदेउ मैदाम को यूनेस्को विश्व विरासत स्थल के रूप में मान्यता मिलना न केवल असम, बल्कि पूरे देश के लिए गर्व की बात है। यह हमारे देश की विविध संस्कृतियों को संरक्षित करने के लिए भारत सरकार के दृढ़ प्रयासों का परिणाम है। चराईदेउ मैदाम को संरक्षित करना इतिहास के एक हिस्से की सुरक्षा के साथ-साथ एक राजवंश की विरासत का सम्मान भी है, जिसने एक क्षेत्र की नियति को आकार और पहचान दी।

ऐतिहासिक जानकारियों का भंडार हैं मैदाम

यदुबीर सिंह रावत

महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग

चराईदेउ मैदाम को विश्व धरोहर स्थलों में शामिल किया गया है। इस वजह से अब केवल भारत के ही नहीं, बल्कि यहाँ भारत के बाहर से भी लोग देखने के लिए आने वाले हैं। मैदाम की जो साइट हैं, वह एक बहुत सुन्दर घाटी है। वहाँ अभी ज़्यादा लोग नहीं रहते हैं। आज की तारीख में भारत सरकार और राज्य सरकार ने मिलकर बहुत अच्छे तरीके से उन्हें संरक्षित किया हुआ है। हम चाहते हैं कि आगे भी ऐसा ही हो। पुरातत्व संरक्षण विभाग चाहेगा कि इसका एक मैनेजमेंट प्लान बने और भविष्य में यहाँ किसी प्रकार का अतिक्रमण न हो। भविष्य के 10-20 सालों को ध्यान में रखते हुए हमें यह ध्यान रखना है कि मैदाम देखने आने वाले पर्यटकों के लिए उचित व्यवस्थाएँ हों।

जहाँ तक पर्यटन के विकास की बात है, यह पूर्वोत्तर भारत के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। सबसे बड़ी चीज, जो हमें ध्यान में रखनी है, वो यह कि मैदाम अपनी वर्तमान स्थिति को बरकरार रखें। हम उस हिसाब से ही इनको विकसित करने की कोशिश करें। इस तरीके से हम उन्हें संरक्षित भी कर सकते हैं और पर्यटन को भी बढ़ा सकते हैं। अहोम लोगों के दिलों में मैदाम को लेकर बहुत सम्मान है, क्योंकि ये उनकी पूर्वजों की समाधियाँ हैं। अहोम लोगों के इस भावनात्मक लगाव के कारण इसे संरक्षित रखने में और आसानी होगी और मैदाम के संरक्षण के लिए स्थानीय समाज का पूरा सहयोग और समर्थन मिल भी रहा है।

जब से मैदाम को विश्व धरोहर के रूप में पहचान मिली है और प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में इसका उल्लेख किया है, तब से लोगों में इसके बारे में जानने के लिए होड़-सी लग गई है। ऐसे सभी पाठकों की जानकारी के लिए मैदाम के बारे में बताता हूँ।

मैदाम जमीन के ऊपर बनी एक संरचना होती है, जिसमें एक कमरा होता है और उसके अंदर एक रास्ता होता है। इस कमरे के ऊपर एक गुम्बद होता है। इस मैदाम में मृत लोगों के शव रखे जाते थे और उनके साथ उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली और उनकी प्रिय चीजें रखी जाती थीं। ऐसा इसलिए किया जाता था, क्योंकि लोगों का मानना था कि मृतक जिस भी जगह जा रहे हैं, उन्हें वहाँ इन वस्तुओं की ज़रूरत पड़ेगी। कमरे में सभी सामानों को रखने के बाद अनुष्ठान कराया जाता था, जिसके बाद उस कमरे को बंद कर दिया जाता था। दूसरे चरण में उस कमरे के चारों ओर मिट्टी डाली जाती थी और इस प्रकार यह एक बहुत सुन्दर आकार ले लेता था, जो कि हमारे स्तूपों से काफी मिलता-जुलता है।

चराईदेउ घाटी में अब तक 90 मैदाम रिपोर्ट किए गए हैं और अब भी खोज जारी है। वर्तमान में अहोम लोग छोटा सा मैदाम बनाकर पारम्परिक तरीके से पूजा करते हैं, परंतु इस वास्तु का प्रयोग 1200 से 1900 शताब्दी तक किया जाता था। अब लोग इस तरह के शवगृह नहीं बनाते हैं, लेकिन अब तक जितने भी मैदाम और इसमें अवशेष मिले हैं, उनके आधार पर मैं यह जरूर कह सकता हूँ कि ये इतिहास के बारे में जानने के लिए बहुत अच्छे स्रोत हैं। इनमें हमें सिक्के, हथियार समेत ऐसी कई चीजें मिलती हैं, जिनसे हमें उस समय के बारे में काफी कुछ पता चलता है। इसलिए यह असम और भारत के इतिहास के साथ-ही-साथ अहोम राजवंश के लिए ऐतिहासिक ज्ञान का भी एक बड़ा भंडार है।

समृद्ध संस्कृति की विरासत को विश्व संरक्षण

डॉ. समुद्र गुप्ता कश्यप

कुलाधिपति, नागालैंड विश्वविद्यालय

अहोम, असमिया समुदाय का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। अहोम, दक्षिण-पूर्व एशिया में व्यापक रूप से फैली महान ताई जाति की एक शाखा है। उनके समकक्ष थाईलैंड के थाई लोग, लाओस के लाओ, म्यांमार में शान, वियतनाम में ताई-थाई और चीन में दाई शामिल हैं।

सिउ-का-फा नामक एक ताई राजकुमार 1228 ई. में युन्नान के मोंग-माओ से ब्रह्मपुत्र घाटी में आया। अब यह दक्षिणी चीन का हिस्सा है। उसने एक राज्य की स्थापना की, जिसके वंश को 'अहोम' राजवंश के रूप में जाना जाता है। कहा जाता है कि 'अहोम' शब्द रहम से लिया गया है। ऊपरी बर्मा में ताई लोगों को यही कहा जाता था, जबकि मूल निवासी उन्हें 'असम' के रूप में संदर्भित करने लगे। यही कारण है कि क्षेत्र को भी 'असम' के रूप में जाना जाने लगा।

सिउ-का-फा ने जिस शहर को राजधानी बनाया, उसका नाम चराईदेउ रखा। इसका अर्थ है पहाड़ियों पर स्थित चमकदार शहर। वहाँ उन्होंने ताई-अहोम के अनेक देवी-देवताओं के लिए कई पूजा स्थल भी बनवाए। उनकी मृत्यु पर उनके शरीर को चराईदेउ में एक अद्वितीय मिट्टी के टीले वाले शवगृह यानी मैदाम में मिट्टी के अंदर दबा दिया गया था। तब से 39 अहोम राजाओं, उनकी रानियों और राजघराने के अन्य सदस्यों में से अधिकांश को चराईदेउ में मैदाम प्रदान किया गया। इसके फलस्वरूप यह अहोमों का सबसे पवित्र स्थान बन गया। कुछ राजाओं और अन्य रईसों के कुछ मैदाम अन्य स्थानों पर भी मौजूद हैं, किन्तु चराईदेउ में शाही मैदामों का समूह है, जिसे हाल ही में यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल के रूप में मान्यता दी गई है।

अहोम ने 600 वर्षों तक शासन किया। उसके बाद 1817 में बर्मी ने देश पर कब्जा कर लिया। बाद में 1826 में अंग्रेज़ों ने इस पर कब्जा कर लिया।

अहोमों ने असमी पहचान, भाषा और संस्कृति को आकार देने में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने स्थानीय भाषा को अपनाया, स्थानीय समुदायों के साथ घुल-मिल गए और उनसे विवाह किया तथा कई राज्यों और समुदायों को एक छत्र के नीचे लाए। उन्होंने असम में एक सांड/भैंसे के हल से पानी की अधिकता वाले क्षेत्र में चावल की खेती भी शुरू की। इस प्रकार अहोम शब्द, भाव, विचार, रीति-रिवाज़ और त्यौहार असमिया जीवन में आसानी से पहुँच गए।

अहोम राजाओं ने कला और संस्कृति को बढ़ावा दिया। उन्होंने धार्मिक और शैक्षणिक संस्थानों को संरक्षण प्रदान

किया। इतना ही नहीं, उन्होंने एक ऐसी व्यवस्था शुरू की, जिसमें हर परिवार खाद्यान्न और कपड़े सहित बुनियादी आवश्यकताओं का उत्पादन करके आत्मनिर्भर रह सकता था। वे खेलों के महान संरक्षक थे और शिवसागर में स्थित एशिया का पहला अखाड़ा रंग-घर इसका प्रमाण है।

उनकी प्रशासन प्रणाली का नेतृत्व एक शक्तिशाली मंत्रिमंडल करता था। उस मंत्रिमंडल के पास राजा को पदस्थ अथवा अपदस्थ करने का भी अधिकार था। उनके पास कोई नियमित स्थायी सेना नहीं थी, परंतु हर सक्षम पुरुष को सेना में कुछ महीने सेवा करनी पड़ती थी। इसके बावजूद अहोम ने बंगाल के सुल्तानों और दिल्ली के मुगलों के 18 हमलों का विरोध किया। सरायघाट के युद्ध (1671) में जनरल लचित बोरफुकन के नेतृत्व में असमियों ने मुग़लों को सबसे करारी हार दी।

असम में अहोमों के आगमन ने भारतीय उपमहाद्वीप में मानव इतिहास के एक निर्णायक क्षण को चिह्नित किया।

उपनिवेश विरोधी आंदोलन में अहोमों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंग्रेज़ों के आने के दो साल के भीतर 1828 में पहला विरोध गोमधर कोंवर नामक एक अहोम राजकुमार ने किया था। जेल में उनकी मृत्यु हो गई थी और वे असम के पहले शहीद बन गए। पियोली फुकन और जीउराम दुलिया बरुआ 1830 में फाँसी पर चढ़ाए जाने वाले पहले दो स्वतंत्रता सेनानी भी अहोम थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले अन्य अहोमों में कुशाल कोंवर, भोगेश्वरी फुकनानी और गोलापी गोगोई जैसे नाम शामिल हैं।

स्वतंत्रता के बाद की अवधि में अहोम ने सार्वजनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री, कुलपति और मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया है। मनोरंजन और खेल जैसे अन्य क्षेत्रों में भी इस समुदाय का योगदान सराहनीय रहा है। इनमें ओलम्पिक पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन और अर्जुन पुरस्कार विजेता भोगेश्वर बरुआ के नाम उल्लेखनीय हैं।

प्रोजेक्ट परी

लोक कला और लोक संस्कृति को मिल रहा बढ़ावा

प्रोजेक्ट परी, उभरते कलाकारों को एक मंच पर लाकर पब्लिक आर्ट को लोकप्रिय बनाने का एक बेहतरीन माध्यम बन रहा है। यह जहाँ हमारे सार्वजनिक स्थानों की सुंदरता को बढ़ाता है, वहीं हमारी संस्कृति को और अधिक लोकप्रिय बनाने में भी मदद करता है।

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

नई दिल्ली में 21 से 31 जुलाई, 2024 तक आयोजित विश्व धरोहर समिति की बैठक के 46वें सत्र के अवसर पर भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की पहल प्रोजेक्ट परी (पब्लिक आर्ट ऑफ़ इंडिया) की शुरुआत ललित कला अकादमी और राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी ने की। भारत की पारम्परिक लोक कला और लोक संस्कृति को समकालीन विषयों के साथ जोड़कर दिल्ली के सांस्कृतिक और सौन्दर्य परिदृश्य को उन्नत करने की कोशिश की जा रही है। देश भर से 150 से अधिक दृश्य कलाकारों को आमंत्रित किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य राजधानी की ऐतिहासिक विरासत को समृद्ध करना और इसके सौंदर्य को बढ़ाना है।

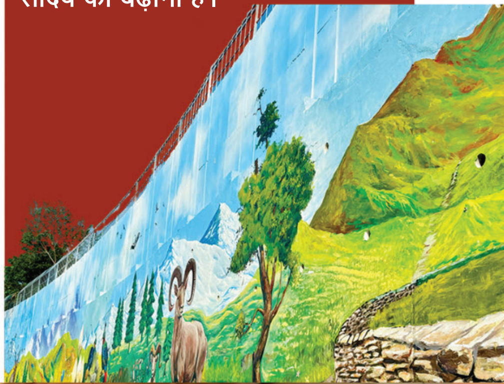

प्रोजेक्ट परी का महत्त्व

भारत कलात्मक अभिव्यक्ति का केंद्र रहा है, जहाँ सार्वजनिक कला सामाजिक स्थलों पर संस्कृति के महत्त्व और प्रसार को दर्शाती है। वर्तमान समय में सार्वजनिक प्रतिष्ठानों के माध्यम से कला का यह लोकतंत्रीकरण शहरी परिदृश्यों को सुलभ दीर्घाओं में बदल देता है और कला संग्रहालयों तथा दीर्घाओं जैसे पारम्परिक स्थानों की खूबसूरती बढ़ा देता है। यह समावेशी दृष्टिकोण सड़कों, पार्कों और पारगमन केंद्रों में कला को एकीकृत करके, साझा सांस्कृतिक पहचान को बढ़ावा देता है, सामाजिक समरसता को बढ़ाता है और नागरिकों को अपने दैनिक जीवन में कला से जुड़ने के लिए आमंत्रित करता है। परियोजना परी का उद्देश्य संवाद, गहन चिंतन और प्रेरणा को प्रोत्साहित करना है, जो राष्ट्र के सांस्कृतिक ताने-बाने के सशक्तीकरण में योगदान देता है।

दृश्य कला रूपों का प्रदर्शन

इस सौंदर्यीकरण परियोजना के लिए मूर्तियों, भित्ति चित्रों और प्रतिष्ठानों सहित पारम्परिक कला रूपों को तैयार किया गया है। कलाकृतियों में फड़ पेंटिंग, थंगका, लघुचित्र, गोंड कला, तंजौर, कलमकारी और अल्पोना जैसी शैलियाँ शामिल हैं। प्रस्तावित मूर्तियाँ विविध विषयों को दर्शाती हैं, जैसे कि प्रकृति को श्रद्धांजलि, नाट्यशास्त्र, गाँधीजी, भारतीय खिलौने, आतिथ्य, प्राचीन ज्ञान, नाद (आदिम ध्वनि), जीवन की समरसता और दिव्य वृक्ष कल्पतरु आदि।

प्रोजेक्ट परी का उद्देश्य दिल्ली को भारत की समृद्ध कलात्मक विरासत और समकालीन अभिव्यक्ति से सराबोर करना है। यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण भारत की विविध परम्पराओं और सार्वजनिक स्थानों के साथ उनके पारस्परिक प्रभाव को प्रदर्शित करता है। यह पहल नागरिकों को शामिल करके तथा साझा सांस्कृतिक पहचान को बढ़ावा देकर शहरी परिदृश्य को समृद्ध करने के साथ अपनी विरासत से हमारे लगाव को बढ़ाती है।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस 2024

विरासत का उत्सव और बुनकरों के श्रम का सम्मान

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने हाल के सम्बोधन में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री मोदी ने हथकरघा बुनाई और भारत के सांस्कृतिक और आर्थिक ताने-बाने के बीच सम्बंध पर जोर दिया। बुनकरों और सम्बद्ध श्रमिकों में से 80 प्रतिशत से अधिक महिलाएँ हैं। इस प्रकार, हथकरघा बुनाई उन तरीकों में से एक है, जिसके द्वारा देश भर में महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है। उत्पादन की प्रक्रिया टिकाऊ होने के साथ-साथ इसमें पर्यावरण के अनुकूल तरीकों का इस्तेमाल होता है।

प्रत्येक वर्ष 7 अगस्त को राष्ट्र एक साथ मिलकर इस दिवस का उत्सव मनाता है। यह दिन बुनकरों के अमूल्य योगदान को मान्यता देने और उनके प्रति आभार व्यक्त करने के लिए समर्पित है, जो हमारे विविधतापूर्ण समाज और विकास का अभिन्न अंग रहे हैं। भारत में तैयार उत्पादों, विशेष रूप से हथकरघा वस्त्रों का समर्थन करने के लिए 2015 में इसकी शुरुआत की गई थी। यह दिन 1905 के स्वदेशी आंदोलन की याद दिलाता है।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस 2024 त्यौहार की अवधि के दौरान आया है। इस प्रकार यह हाशिए पर पड़े बुनकर समुदायों के उत्थान और पारम्परिक हथकरघा उत्पादों को बढ़ावा देने का एक प्रमुख अवसर प्रदान करता है। देश भर में इस दिन लोग बुनकरों के शिल्प का जश्न मनाते हैं। इतना ही नहीं, वे प्रदर्शनियाँ लगाकर उनके काम पर गर्व महसूस करते हैं और देश के आर्थिक तथा सामाजिक उत्थान के साथ-साथ हथकरघा विरासत को बढ़ावा देने में उनके योगदान को महत्त्व देते हैं।

यह दिवस हथकरघा उत्पादन में निहित आधुनिकता और लचीलेपन पर भी प्रकाश डालता है। पारम्परिक हथकरघा उत्पाद फैशन में होने वाले बदलावों और ग्राहकों की पसंद के हिसाब से खुद को ढाल लेते हैं और पुराने को नए के साथ मिला देते हैं। यह अनुकूलनशीलता शिल्प को प्रासंगिक बनाए रखती है और इन बेहतरीन उत्पादों के लिए नए बाज़ार भी खोलती है।

कोषा एआई, हैंडलूम इंडिया, डी-जंक, नोवाटैक्स और ब्रह्मपुत्र फैबल्स जैसे स्टार्टअप हथकरघा उत्पादों को लोकप्रिय बनाने में अग्रणी हैं। ये उद्यम हथकरघा क्षेत्र में नवाचार और उसे कारगर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का दोहन करते हैं। कोषा एआई को आईओटी, एआई, इम्यूटेबल लेजर और क्लाउड कम्प्यूटिंग प्रौद्योगिकी की शक्ति का लाभ

प्राप्त होता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि हथकरघा उत्पाद समकालीन फैशन रुझानों के अनुरूप हों।

नोवाटेक्स इलेक्ट्रिकल सिलेंडर, साड़ियों और धोतियों पर डिज़ाइन बुनने की प्रक्रिया को सरल बनाता है। इससे हज़ारों पंच कार्डों पर निर्भरता खत्म हो जाती है, क्योंकि इन्हें हर नए डिज़ाइन के लिए पुन: कॉन्फिगरेशन की आवश्यकता होती है। ब्रह्मपुत्र फैबल्स स्वदेशी शिल्प को बढ़ावा देते हुए कारीगरों को सीधे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से उपभोक्ताओं से जोड़ता है। ये स्टार्टअप इस बात का उदाहरण हैं कि कैसे तकनीक पारम्परिक उद्योगों को पुनर्जीवित कर सकती है, जिससे हथकरघा उत्पाद आधुनिक उपभोक्ताओं के लिए अधिक सुलभ और आकर्षक बन सकते हैं।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस हथकरघा की सतत विरासत और भारत के सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में उनकी अभिन्न भूमिका की एक महत्त्वपूर्ण याद दिलाता है। यह बुनकरों की कलात्मकता और समर्पण का सम्मान करता है और भारत की विरासत के एक महत्त्वपूर्ण पहलू को बनाए रखने में उनकी भूमिका को महत्त्व देता है। यह दिन हथकरघा उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए उत्प्रेरक का भी काम करता है।

अपने सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने राष्ट्र से आग्रह किया कि हम हैंडलूम उत्पाद खरीदकर और उनके महत्त्व के बारे में जागरुकता फैलाकर हैंडलूम बुनकरों का समर्थन कर सकते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ऐसा करके हम न केवल बुनकरों को सशक्त बनाएँगे, बल्कि भारत की सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान के एक महत्त्वपूर्ण हिस्से के संरक्षण में भी योगदान देंगे।

एआई की मदद से हथकरघा उत्पाद हो रहे लोकप्रिय

"आजकल, जिस तरह हैंडलूम उत्पादों ने लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाई है, वो वाकई बहुत सफल है, जबरदस्त है। अब तो कई निजी कम्पनियाँ भी एआई के माध्यम से हैंडलूम उत्पाद और सस्टेनेबल फैशन को बढ़ावा दे रही हैं। कोशा एआई, हैंडलूम इंडिया, डी-जंक, नोवाटैक्स, ब्रह्मपुत्र फैबल्स, ऐसे कितने ही स्टार्ट-अप भी हैंडलूम उत्पादों को लोकप्रिय बनाने में जुटे हैं।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'मन की बात' सम्बोधन में

भारत का हथकरघा उद्योग उन्नत तकनीक के आने से एक महत्त्वपूर्ण बदलाव का साक्षी बना है। कोशा एआई, हैंडलूम इंडिया और ब्रह्मपुत्र फैबल्स जैसे स्टार्ट-अप इस बदलाव की अगुआई कर रहे हैं, जो पारम्परिक शिल्प को आधुनिक स्वरूप देने के लिए एआई और डिजिटल प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर रहे हैं।

इस नई लहर ने न केवल फैशन उद्योग को आगे बढ़ाया है अपितु कारीगरों को अत्याधुनिक तकनीकों से परिचित कराकर, उनकी कार्य क्षमता अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचाकर उन्हें सशक्त भी बनाया है। हथकरघा उत्पादों के साथ एआई का यह एकीकरण न केवल उनकी उपस्थिति को बढ़ाता है, बल्कि टिकाऊ फैशन के आंदोलन में भी योगदान देता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि ये सदियों पुरानी परम्पराएँ आधुनिक दुनिया में भी फलती-फूलती रहें।

इस तकनीकी नवाचार के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमने कोशा एआई के सह-संस्थापकों और ब्रह्मपुत्र फैबल्स के संस्थापक से बात की। आइए जानें कि उन्होंने अपनी पहल के बारे में क्या कहा।

"हमारे स्टार्टअप को मान्यता देने के लिए हम माननीय प्रधानमंत्री के आभारी हैं। हमने इस तकनीक को इतना सरल बनाया है कि कोई भी साधारण बुनकर इसका उपयोग कर सकता है। यह सस्ता भी है। हमारा ध्यान बुनकरों को अपने उत्पादों को बढ़ाने, अधिक उत्पादन करने और उनके उत्पादों के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करने के लिए सशक्त बनाने पर है।"

विजय कृष्णप्पा- कोशा एआई, सह-संस्थापक

"हमने एक बहुत ही सरल तकनीक बनाई है। सेल फोन के इस्तेमाल से परिचित कोई भी व्यक्ति इसे संचालित कर सकता है। हमने कई भारतीय भाषाओं में ऐप विकसित किया है। हमारा ऐप वास्तव में ऑफलाइन मोड में काम करता है।

हम एआई का उपयोग करके यह वर्गीकृत करते हैं कि क्या असली है और क्या नकली है। आज हम यह सत्यापित कर सकते हैं कि उत्पाद प्रामाणिक हैं। प्रधानमंत्री जी ने 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से हमें प्रोत्साहित किया है। इसके लिए हम प्रधानमंत्री जी के बहुत आभारी हैं।"

-रामकी कोडिपाडी-कोशा एआई, सह-संस्थापक

"ब्रह्मपुत्र फैबल्स एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जो पूर्वोत्तर भारत के कारीगरों और बुनकरों को एकीकृत करता है। इसके माध्यम से हम उनके हस्तनिर्मित उत्पादों को बेच सकते हैं और उन्हें उपभोक्ताओं से जोड़ सकते हैं। हमारे अधिकांश उत्पाद टिकाऊ हैं, जिसका कार्बन फुटप्रिंट शून्य है। जिस बात का मैंने 25 साल की उम्र में सपना देखा, उसका अब प्रधानमंत्री जी 'मन की बात' में उल्लेख कर रहे हैं। यह मेरे लिए गर्व का क्षण है। यह एक शानदार एहसास है।"

ध्रुब ज्योती डेका, संस्थापक,
ब्रह्मपुत्र फैबल्स

खादी क्रांति : प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 'विकसित भारत' की गारंटी

मनोज कुमार

अध्यक्ष

खादी और ग्रामोद्योग आयोग, भारत सरकार

भारतीय इतिहास में अगस्त का महीना 'क्रांति के महीने' के रूप में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। सही मायने में अगस्त का महीना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन क्रांतिवीरों को याद करने का है, जिनके सर्वोच्च बलिदान और त्याग से हमें 'स्व-शासन' हासिल हुआ। इन क्रांतिदूतों में लाखों ऐसे भी गुमनाम नायक हैं, जिन्होंने पूज्य बापू के नेतृत्व में चरखे और करघे पर खादी का ताना-बाना बुनकर अंग्रेजी शासन को झुकने पर मजबूर कर दिया। आज आज़ादी के सात दशक बाद भी पूज्य बापू की विरासत– खादी, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 'खादी क्रांति' के माध्यम से विकसित भारत अभियान को गाँव-गाँव में नई शक्ति दे रही है।

प्रधानमंत्री 'नए भारत की नई खादी' के कर्णधार और खादी के ब्रांड एम्बेसडर हैं। विगत 28 जुलाई को उन्होंने फिर से 'मन की बात' के 112वें संस्करण में खादी खरीदने के लिए देशवासियों से अपील की है।

विकसित भारत के संकल्प को सफल बनाने के लिए केवीआईसी ने गाँव-गाँव में कुटीर उद्योगों की व्यापक शृंखला तैयार की है। सामूहिक प्रयासों का ही परिणाम है कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार वित्त वर्ष 2023-24 में खादी और ग्रामोद्योग के उत्पादों की बिक्री 1 लाख 55 हजार करोड़ रुपये के आँकड़े को पार कर गई है। पहली बार इस क्षेत्र में 10.17 लाख नए रोज़गार सृजित हुए हैं।

'वोकल फॉर लोकल' पर प्रधानमंत्री के जोर ने खादी पुनरुद्धार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी 'ब्रांड शक्ति' ने पिछले 10 वर्षों में देश में 'खादी क्रांति' को जन्म दिया है, जिसके परिणाम बहुत सकारात्मक रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2023-24 में केवीआईसी के कारोबार में पिछले दशक की तुलना में, बिक्री में 400 प्रतिशत और उत्पादन में 315 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। पिछले 10 वर्षों में खादी कामगारों के पारिश्रमिक में भी 233 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। चूँकि खादी कारीगरों में लगभग 80 प्रतिशत महिलाएँ हैं, अतः महिला कारीगरों को विशेष रूप से लाभ मिला है। महिला सशक्तीकरण पर यह ध्यान प्रधानमंत्री के समावेशी विकास के दृष्टिकोण के अनुरूप है और इसने ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार किया है।

नए भारत की नई खादी को वैश्विक ब्रांड बनाने के लिए केवीआईसी ने गुणवत्ता और आधुनिकीकरण पर विशेष ध्यान दिया है। इसके लिए राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (NIFT) के सहयोग से खादी के लिए उत्कृष्टता केंद्र (CoEK) की स्थापना की गई है। इसकी मदद से खादी को अधिक फैशनेबल बनाने के लिए नई डिजाइनिंग, प्राकृतिक रंगों का प्रयोग, परम्परागत साड़ी और कपड़ा, जैसे– अवध जामदानी, पोंडुरु साड़ी, पश्मीना, ओडिशा इक्कत, पैठनी इत्यादि पारम्परिक उत्पादों को पुनर्जीवित किया जा रहा है। इसके अलावा डिजिटल इंडिया कॉर्पोरेशन, एनबीसीसी इंडिया, प्रसार भारती और क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया (QCI) के साथ भी समझौता ज्ञापनों (MoUs) पर हस्ताक्षर किए हैं। खादी की पैकेजिंग, ब्रांडिंग, क्वालिटी और मार्केटिंग में भी नए प्रयोग किए जा रहे हैं।

ग्रामोद्योग विकास योजना के अंतर्गत हनी मिशन और कुम्हार सशक्तीकरण जैसे आयोग के कार्यक्रमों में कारीगरों के कौशल में वृद्धि के साथ ही उन्हें आय सृजन के अवसर प्रदान किए हैं। इसके लिए उन्हें प्रशिक्षण के साथ ही उन्नत प्रकार की आधुनिक मशीन और टूलकिट भी दी गई हैं।

भविष्य के लिए केवीआईसी के विज़न में खादी और ग्रामोद्योग क्षेत्र को और बढ़ावा देने के लिए कई महत्त्वाकांक्षी योजनाओं को शुरू करने की तैयारी है, जिसमें-

1. ग्रामीण सिलाई समृद्धि योजना
2. कुशल कारीगर विकास योजना
3. खादी शक्ति
4. लोटस सिल्क
5. माटी कला कुम्हार सशक्तीकरण योजना शामिल हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में खादी वैश्विक क्रांति के लिए तैयार है। 'खादी फॉर नेशन, खादी फॉर फैशन और खादी फॉर ट्रांसफॉर्मेशन' का मंत्र इस विजन का सार है। स्वदेशी आंदोलन के दिनों से लेकर आत्मनिर्भर भारत का प्रतीक बनने तक की खादी की यात्रा इसके स्थायी महत्त्व का प्रमाण है।

मानस हेल्पलाइन

ड्रग्स के विरुद्ध निर्णायक युद्ध

"मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में मैंने अक्सर आपसे ड्रग्स की चुनौती की चर्चा की है। हर परिवार की ये चिंता होती है कि कहीं उनका बच्चा ड्रग्स की चपेट में ना आ जाए। अब ऐसे लोगों की मदद के लिए सरकार ने एक विशेष केंद्र खोला है, जिसका नाम है– 'मानस'। ड्रग्स के खिलाफ लड़ाई में ये बहुत बड़ा कदम है। कुछ दिन पहले ही 'मानस' की हेल्पलाइन और पोर्टल को लॉन्च किया गया है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

"नशा मुक्त भारत अभियान के तहत अब तक देश भर में 3 लाख 95 हजार से अधिक गतिविधियों का आयोजन किया गया है ताकि लोगों को ड्रग्स सेवन के खतरे के बारे में अवगत कराया जा सके। इस प्रयास के तहत उनके साथ व्यापक चर्चा भी की गई है।"

-बी एल वर्मा

सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री

भारत के कुछ क्षेत्रों में नशीली दवाओं की लत एक बड़ी समस्या है, जो न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव डालती है। नशीली दवाओं की लत से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए भारत सरकार ने MANAS (मादक पदार्थ निषेध आसूचना केंद्र) हेल्पलाइन शुरू की है, जो उन लोगों की मदद करने के लिए एक अनोखा प्रयास है, जो नशीली दवाओं की लत से जूझ रहे हैं।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने 18 जुलाई, 2024 को नई दिल्ली में राष्ट्रीय नारकोटिक्स हेल्पलाइन MANAS की शुरुआत की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने पिछले 5 साल में सरकारी दृष्टिकोण और स्ट्रक्चरल रिफॉर्म्स, इंस्टीट्यूशनल और इंफॉर्मेशनल रिफॉर्म्स के तीन स्तम्भों के आधार पर समग्रता से इस लड़ाई को लड़ने का प्रयास किया है।

इस मुहिम के तहत एक टोल-फ्री नम्बर 1933 जारी किया गया है और एक वेब पोर्टल भी प्रारम्भ किया गया है, साथ ही अवैध नशीली दवाओं से जुड़ी जानकारी को 'उमंग' ऐप के माध्यम से भी रिपोर्ट करने का प्रावधान विकसित किया गया है। देश के सामान्य नागरिकों तक और सुगम पहुँच के लिए भारत सरकार मानस हेल्पलाइन मोबाइल ऐप भी तैयार कर रही है।

मानस हेल्पलाइन क्या है?

मानस गृह मंत्रालय के नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की एक पहल है, जो भारत के नागरिकों को मादक पदार्थों की तस्करी और अन्य अवैध गतिविधियों सम्बंधी जानकारी को मुखबिर की पहचान बताए बिना सुरक्षित रूप से साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। इस मंच का उपयोग नागरिक ड्रग्स के दुरुपयोग की रोकथाम और मादक पदार्थों के आदी लोगों के उपचार और पुनर्वास में मदद लेने के लिए भी कर सकते हैं। नागरिकों से प्राप्त जानकारी और शिकायतों का सम्बंधित हितधारकों के माध्यम से समाधान किया जाता है। इसमें एक एकीकृत शिकायत निवारण प्रणाली शामिल है, जो नागरिकों को अपनी शिकायतों को लॉग इन करने, निगरानी करने और दर्ज करने के लिए एकल मंच प्रदान करती है। नागरिक कॉल, ईमेल, वेबसाइट और उमंग मोबाइल ऐप्लिकेशन के माध्यम से जानकारी और शिकायतों को साझा, दर्ज कर सकते हैं।

मानस हेल्पलाइन की विशेषताएँ

1. 24 घंटे सातों दिन उपलब्धता: मानस हेल्पलाइन 24 घंटे, सातों दिन उपलब्ध है, जो उन लोगों के लिए एक बड़ी राहत है, जो नशीली दवाओं की लत से जूझ रहे हैं और तुरंत मदद चाहते हैं।

2. गोपनीयता : मानस हेल्पलाइन पर कॉल करने वालों की गोपनीयता बनाए रखने का पूरा ध्यान रखा जाता है, जो उन लोगों के लिए एक बड़ी राहत है, जो अपनी लत के बारे में बात करने में हिचकिचाते हैं।

3. प्रशिक्षित परामर्शदाता : मानस हेल्पलाइन पर कॉल करने वालों को प्रशिक्षित परामर्शदाताओं से जोड़ा जाता है, जो उन्हें इस लत से मुक्ति पाने में मदद करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करते हैं।

4. स्थानीय सेवाओं से जुड़ाव : मानस हेल्पलाइन उन लोगों को स्थानीय सेवाओं से जोड़ने में मदद करती है, जो उन्हें इस लत से मुक्ति पाने में मदद कर सकती हैं।

भारत सरकार युवाओं को नशीली दवाओं की लत से बचाने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रही है। सरकार इस समस्या से निपटने के लिए न केवल जागरूकता अभियान चला रही है, बल्कि दोषियों के विरुद्ध भी सख्त कार्रवाई कर रही है, इसी प्रयास के अंतर्गत सरकार बहुत जल्द नारकोटिक्स के प्राथमिक टेस्ट के लिए बहुत सस्ती किट उपलब्ध कराने जा रही है, जिससे केस दर्ज करना और भी आसान हो जाएगा। इसके अलावा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय नशामुक्त भारत अभियान भी चला रहा है। ऐसे में सरकार की ओर से मानस हेल्पलाइन जारी करने का एक और सुनहरा प्रयास नशीली दवाओं की लत से जूझ रहे लोगों के लिए एक वरदान साबित होगा।

भारत में ड्रग्स के खतरे एवं चुनौतियाँ

बी एल वर्मा

सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री

ड्रग्स का सेवन एक व्यापक और बहुआयामी मुद्दा है, जो समाज के सभी वर्गों के लोगों को प्रभावित करता है और अब यह एक वैश्विक खतरा बन गया है। भारत में ड्रग्स का खतरा एक गम्भीर समस्या है, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य के बुनियादी ढाँचे, सामाजिक स्थिरता और आर्थिक विकास को प्रभावित कर रही है। देश को ड्रग्स की लत और सम्बंधित स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने में महत्त्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। यह गम्भीर समस्या विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय सीमाओं वाले क्षेत्रों में है, जिससे अधिक जोखिम वाली आबादी विशेष रूप से असुरक्षित हो जाती है, जिसमें बड़ी संख्या में युवा और किशोर शामिल हैं। इसके परिणाम व्यक्तियों से आगे बढ़कर अपराध, हिंसा और आर्थिक नुकसान के माध्यम से परिवारों और समुदायों को प्रभावित करते हैं, साथ ही विभिन्न मोर्चों पर चुनौतियाँ भी खड़ी करते हैं।

भारत में ड्रग्स के सेवन की समस्या से निपटने और इसकी रोकथाम को प्राथमिक कार्यनीति के रूप में अपनाने के लिए सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग ने नोडल एजेंसी होने के नाते 15 अगस्त, 2020 को अपना प्रमुख अभियान–नशा मुक्त भारत अभियान शुरू किया। इसका प्राथमिक लक्ष्य ड्रग्स के सेवन की रोकथाम सुनिश्चित करना और इसके प्रति जागरूकता बढ़ाना है। अभियान की शुरुआत के बाद से यह अपने प्रारम्भिक दायरे से आगे बढ़कर एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक आंदोलन बन गया है, जिसमें 12 करोड़ से अधिक व्यक्तियों की प्रभावशाली भागीदारी शामिल है। 4 करोड़ से अधिक युवाओं और 3 करोड़ से अधिक महिलाओं की उल्लेखनीय भागीदारी के साथ यह अभियान आशा और परिवर्तनकारी बदलाव की किरण के रूप में खड़ा है।

इस अभियान के तहत ड्रग्स के सेवन की रोकथाम की दिशा में युवाओं और महिलाओं की जागरूकता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। युवाओं का कल्याण सुनिश्चित करने और जनसांख्यिकीय लाभांश द्वारा प्रदान की जाने वाली वृद्धि का लाभ उठाने के लिए ऐसा किया जाता है। विभाग ने संवेदनशील क्षेत्रों में रहने

वाले बच्चों में ड्रग्स के सेवन की शुरुआत को रोकने और उन्हें इस व्यसन से मुक्त करने के लिए सीपीएलआई के तहत कई उपाय किए हैं। इसके साथ ही भारत सरकार ने नवचेतना मॉड्यूल भी पेश किए हैं, जिन्हें स्कूली विद्यार्थियों में ड्रग्स के सेवन की रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए शिक्षकों द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। नवचेतना मॉड्यूल का लक्ष्य 10 लाख शिक्षकों के प्रशिक्षण के माध्यम से 2.5 करोड़ विद्यार्थियों तक पहुँचना है। भारत सरकार ने उपचार केंद्रों और पुनर्वास सुविधाओं के व्यापक नेटवर्क के माध्यम से ड्रग्स का सेवन करने वालों के लिए उपचार के महत्त्व पर ज़ोर दिया है। यही कारण है कि नशा मुक्ति केंद्रों की संख्या 490 (2020-21) से बढ़कर 660 (2023-2024) हो गई है और मार्च, 2025 तक ऐसे 100 और केंद्र पूरे हो जाएँगे। आउटरीच कार्यकर्ताओं द्वारा व्यवहार परिवर्तन संचार की सुविधा और बुनियादी चिकित्सा तथा मनोवैज्ञानिक उपाय करने के लिए इन-पेशेंट उपचार सुविधाओं के साथ-साथ, आउटरीच ड्रॉप-इन केंद्र भी स्थापित किए गए हैं। प्रशिक्षित

परामर्शदाताओं द्वारा टेली-सेवाएँ उपलब्ध कराने तथा सटीक जानकारी प्रदान करने, उपचार और स्वास्थ्य सेवाओं के सम्बंध में गलत धारणाओं को दूर करने के लिए किशोरों, महिलाओं, बच्चों और आम जनता के बीच राष्ट्रीय टोल-फ्री हेल्पलाइन नम्बर 14446 का व्यापक प्रचार किया गया है।

नशा मुक्त भारत अभियान के तहत अब तक देश भर में 3 लाख 95 हजार से अधिक गतिविधियों का आयोजन किया गया है ताकि लोगों को ड्रग्स सेवन के खतरे के बारे में अवगत कराया जा सके। इस प्रयास के तहत उनके साथ

व्यापक चर्चा भी की गई है। इस अभियान की गतिविधियों में देश भर में विभिन्न हितधारकों के साथ आयोजित की जाने वाली गतिविधियों की एक व्यापक शृंखला शामिल है, जिसमें सम्बंधित मंत्रालय, राज्य/केंद्रशासित प्रदेश सरकारें, जिला प्रशासन, शैक्षणिक संस्थान, आध्यात्मिक संगठन और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय निकाय शामिल हैं। इस पहल के माध्यम से फैलाई गई जागरूकता के कारण नशामुक्ति सुविधाओं से सहायता लेने वाले व्यक्तियों में 135 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ड्रग्स की माँग में कमी के लिए कई पहल के साथ अभियान ने ड्रग्स के खतरे से निपटने के लिए विभिन्न लक्षित उपायों के माध्यम से अधिकारियों को सक्षम बनाया है। इसमें ड्रग्स की रोकथाम और इस समस्या से उचित तरीके से निपटने के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण, आवश्यक उपकरण और दिशा-निर्देश तथा सेवाओं के अंतर्सम्बंधों का लाभ उठाते हुए सरकारी विभागों के बीच बेहतर समन्वय की सुविधा शामिल है।

78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, जब नशा मुक्त भारत अभियान अपने शुभारम्भ के बाद से 5वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है, विभाग ने 12 अगस्त, 2024 को नई दिल्ली में ड्रग्स के खिलाफ़ एक देशव्यापी सामूहिक शपथ का आयोजन किया। माननीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने यह शपथ दिलाई, साथ ही सम्बंधित मंत्रालयों, राज्यों/जिला प्रशासनों, स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, अन्य शैक्षणिक संस्थानों और सार्वजनिक/निजी संस्थानों के करोड़ों प्रतिभागियों ने देश भर में अपने-अपने स्थानों पर शपथ ली और अभियान ने देश भर से 3 करोड़ से अधिक लोगों का समर्थन और भागीदारी हासिल की। नशा मुक्त भारत अभियान की वेबसाइट पर एक ई-शपथ भी उपलब्ध कराई गई है। मैं सभी विद्यार्थियों, युवाओं, महिलाओं, अधिकारियों, संस्थानों और अन्य लोगों से ई-शपथ लेने और अभियान में शामिल होने का आग्रह करता हूँ। हम नशा मुक्त भारत अभियान को अनेक संवादात्मक, शैक्षिक गतिविधियों और पहलों के माध्यम से आगे बढ़ा रहे हैं, हमारा ध्यान समूचे देश में ड्रग्स की माँग को कम करने पर है। सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि ड्रग्स के सेवन से प्रभावित प्रत्येक व्यक्ति को सहायता प्रदान की जाए, ताकि स्वस्थ और नशा मुक्त भारत बनाने के हमारे सामूहिक प्रयासों में कोई भी पीछे न छूटे।

बुलंद रहे दहाड़

बाघ संरक्षण में भारत अग्रणी

“भारत में ‘बाघ’ हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। हम सब बाघों से जुड़े किस्से-कहानियाँ सुनते हुए ही बड़े हुए हैं। जंगल के आस-पास के गाँव में तो हर किसी को पता होता है कि बाघ के साथ ताल-मेल बिठाकर कैसे रहना है। हमारे देश में ऐसे कई गाँव हैं, जहाँ इंसान और बाघ के बीच कभी टकराव की स्थिति नहीं आती।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

हर साल 29 जुलाई को, पूरा विश्व एक साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस मनाता है। यह धरती पर प्रकृति के सबसे प्रतिष्ठित जीवों में से एक है। इसकी रक्षा करना हमारा साझा दायित्व है। पहली बार 2010 में रूस में सेंट पीटर्सबर्ग टाइगर समिट में अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस मनाया गया। इसका उद्देश्य जंगली बाघों की आबादी में खतरनाक गिरावट को उजागर करने के साथ उनके संरक्षण के लिए वैश्विक प्रयासों को प्रोत्साहित करना है। शिखर सम्मेलन में 13 देशों ने सामूहिक रूप से बाघों के रहने के स्थान की सुरक्षा और दुनिया भर में उनकी आबादी बढ़ाने के उद्देश्य से संरक्षण के अनेक उपायों को लागू करने की प्रतिबद्धता जताई।

अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस 2024 की थीम समन्वित प्रयासों के माध्यम से बाघों और उनके रहने के स्थान की रक्षा करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण ‘कार्रवाई का आह्वान’ पर ज़ोर देती है।

अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस का महत्त्व केवल उत्सव मनाने से कहीं आगे तक फैला हुआ है। यह बाघ संरक्षण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण बिंदु के रूप में कार्य करता है और अब तक की प्रगति और भविष्य में आने वाली चुनौतियों का भी ध्यान रखता है।

दुनिया के 70 फीसदी जंगली बाघ भारत में रहते हैं। देश में कम-से-कम 3,167 बाघ हैं, जो 6.1 प्रतिशत सराहनीय वार्षिक वृद्धि दर को दर्शाता है। बाघ संरक्षण को लेकर यह असाधारण सफलता भारत सरकार के राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण द्वारा पूरे भारत में राज्य सरकारों के सहयोग से किए गए अभूतपूर्व प्रयासों का परिणाम है। पिछले साल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आरम्भ की गई दूरदर्शी योजना, ‘बाघ संरक्षण के लिए अमृत काल विज़न’ का

उद्देश्य बाघों के दीर्घकालिक अस्तित्व को सुरक्षित करना है। इतना ही नहीं, बाघ अभयारण्यों के मूर्त और अमूर्त, दोनों लाभों की रक्षा करना है। यह इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए परिदृश्य-स्तरीय योजना, क्षेत्रीय एकीकरण और रणनीतिक अभिसरण पर केंद्रित है। हाल ही में जिन क्षेत्रों में बाघ गायब हुए हैं, वहाँ जंगली बाघों की आबादी को बढ़ाने के प्रयासों के तहत बाघों को फिर से लाने का कार्यक्रम शुरू किया गया है। राजाजी टाइगर रिज़र्व (उत्तराखंड), माधव नेशनल पार्क (मध्य प्रदेश), मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिज़र्व और रामगढ़ विषधारी (राजस्थान) के पश्चिमी भाग में बाघों को फिर से लाया गया है।

इस साल फरवरी में कैबिनेट ने इंटरनेशनल बिग कैट अलायंस (आईबीसीए) की स्थापना को भी मंजूरी दी थी। आईबीसीए एक प्रमुख वैश्विक गठबंधन है, जिसे भारत ने अप्रैल, 2023 में प्रोजेक्ट टाइगर की 50वीं वर्षगाँठ के अवसर पर सात प्रमुख बिग कैट के संरक्षण के लिए लॉन्च किया था। सात बिग कैट में बाघ, शेर, तेंदुआ, हिम तेंदुआ, प्यूमा, जगुआर और चीता शामिल हैं। इनमें से पाँच बिग कैट यानी बाघ, शेर, तेंदुआ, हिम तेंदुआ और चीता भारत में पाए जाते हैं।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय समुदाय बाघ संरक्षण से जुड़ी अभिनव पहलों में सबसे आगे हैं। राजस्थान के रणथम्भौर में 'कुल्हाड़ी बंद पंचायत' एक अनुकरणीय अभियान है। स्थानीय समुदायों ने पेड़ों को न काटने और न ही कुल्हाड़ी लेकर जंगल में प्रवेश करने का संकल्प लिया है। यह सरल, लेकिन शक्तिशाली निर्णय जंगलों को फिर से जीवित करने और बाघों के लिए रहने का बेहतर स्थान बनाने में मदद कर रहा है। इसी तरह महाराष्ट्र के ताडोबा-अंधारी टाइगर रिज़र्व में गोंड और माना जनजातियों ने इको-सिस्टम को बेहतर बनाने पर ज़ोर दिया है। इससे वन संसाधनों पर उनकी निर्भरता काफी कम हो गई है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अपने 112वें 'मन की बात' सम्बोधन में समुदाय द्वारा संचालित बाघ के संरक्षण से जुड़े प्रयासों की सराहना की। *"मुझे ख़ुशी है कि जन-भागीदारी बाघों के संरक्षण में बहुत काम आ रही है। ऐसे प्रयासों की वजह से ही भारत में बाघों की आबादी हर साल बढ़ रही है। आपको ये जानकर ख़ुशी और गर्व का अनुभव होगा कि दुनियाभर में जितने बाघ हैं, उनमें से 70 प्रतिशत बाघ हमारे देश में हैं। सोचिए! 70 प्रतिशत बाघ! - तभी तो हमारे देश के अलग-अलग हिस्सों में कई टाइगर सैंक्चुएरी हैं।"*

भारत में अब 54 बाघ अभयारण्य हैं, हाल ही में रानी दुर्गावती बाघ अभयारण्य को मध्य प्रदेश का 7वाँ बाघ अभयारण्य घोषित किया गया है। यह विस्तार वन्यजीव संरक्षण के प्रति महत्त्वपूर्ण प्रतिबद्धता को दर्शाता है, क्योंकि ये अभयारण्य सामूहिक रूप से 78,000 वर्ग किलोमीटर में फैले हुए हैं और देश के भौगोलिक क्षेत्र के 2.30 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र को कवर करते हैं।

बाघ संरक्षण के लिए भारत का दृष्टिकोण पारम्परिक ज्ञान, सामुदायिक भागीदारी और आधुनिक तकनीकों के एक सशक्त सम्मिश्रण को दर्शाता है। चूँकि देश लगातार उदाहरण पेश कर रहा है, बाघों के समृद्ध भविष्य को सुनिश्चित करने हेतु इन प्रयासों को बनाए रखना और उनका विस्तार करना हम सबके लिए महत्त्वपूर्ण है।

बाघों के साथ सामंजस्य
भारत का प्रभावी संरक्षण प्रयास

बाघ पीढ़ियों से हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। पूरे देश में, ऐसे कई गाँव हैं, जहाँ मनुष्य और बाघ सामंजस्य के साथ रहते हैं। हालाँकि, जिन जगहों पर संघर्ष होते हैं, वहाँ बाघों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हर सम्भव उपाय किए जाते हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के सम्बोधन में पूरे भारत में समुदाय के नेतृत्व वाले बाघ संरक्षण प्रयासों पर प्रकाश डाला और उनकी प्रशंसा की। इसी सन्दर्भ में दूरदर्शन समाचार की टीम ने कुछ प्रमुख बाघ संरक्षक स्थलों के लोगों से बात की।

"ताड़ोबा में बाघों की आबादी बढ़ने से पर्यटन में वृद्धि हुई है और अधिक संख्या में स्वदेशी और अंतरराष्ट्रीय पर्यटक इस क्षेत्र में आ रहे हैं। पर्यटन में इस वृद्धि ने स्थानीय ग्रामीणों की आय में सुधार किया है और उनके जीवन-स्तर में बदलाव आया है। परिणामस्वरूप ग्रामीण बाघ संरक्षण प्रयासों में वन विभाग का सक्रिय रूप से सहयोग करते हैं। प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' कार्यक्रम में गोंड और माना जनजातियों का उल्लेख करने से हमें बाघ संरक्षण में योगदान जारी रखने की प्रेरणा मिली।"

- दीपा शशिकांत नन्नावरे, सफारी गाइड, ताडोबा-अंधारी टाइगर रिज़र्व

"मैं अगरजारी कैम्प साइट पर इको-टूरिज़्म मैनेजर के तौर पर काम करती हूँ। गोंड और माना जनजातियाँ ऐतिहासिक रूप से वन क्षेत्र में रहती हैं और खुद को जंगल का हिस्सा मानती हैं, जो उन्हें इसकी रक्षा करने के लिए प्रेरित करता है। प्रधानमंत्री द्वारा हाल में 'मन की बात' में इन जनजातियों की प्रशंसा ने जनजातीय समुदायों को अपने संरक्षण प्रयासों को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। स्थानीय स्वयं सहायता समूह तितली उद्यान, एडवेंचर पार्क और प्रकृति का प्रबंधन करते हैं।"

- अजय कोडापे, इकोटूरिज्म मैनेजर, अगरजारी कैम्प साइट

"गोंड और माना जनजातियाँ ताडोबा-अंधारी टाइगर रिजर्व के मुख्य निवासी हैं और उन्होंने इसके संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस मजबूत सम्बंध ने क्षेत्र में बाघों की आबादी में वृद्धि में योगदान दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 'मन की बात' में वन रक्षक के रूप में गोंड और माना जनजातियों का उल्लेख करने से जनजातीय समुदायों को बहुत प्रेरणा मिली है। इस प्रशंसा ने हमें बहुत खुशी दी है और इस उत्कृष्ट कार्य को जारी रखने की प्रेरणा दी है।"

- बंदू कुमारे, टूरिस्ट गाइड, ताडोबा-अंधारी टाइगर रिजर्व

"आंध्र प्रदेश की नल्लामाला पहाड़ियों पर रहने वाली 'चेंचू' जनजाति ने टाइगर ट्रैकर के रूप में जंगल में जानवरों की आवाजाही के बारे में हर जानकारी एकत्र की है। इसके साथ ही वे क्षेत्र में अवैध गतिविधियों पर भी नज़र रखते हैं।"

आंध्र प्रदेश की नल्लामाला पहाड़ियों में चेंचू जनजाति के उल्लेखनीय संरक्षण प्रयासों को भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के दौरान उजागर किया। इसी क्रम में हमारी टीम ने नल्लामाला वन के कुछ लोगों से बात की।

"हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में नल्लामाला जंगल में बाघ ट्रैकर के रूप में चेंचू की महत्त्वपूर्ण भूमिका की प्रशंसा की। इस क्षेत्र के मूल निवासी होने और जंगल के भीतर रहने के कारण, वे स्थानीय वन्यजीवों से अच्छी तरह परिचित हैं। नल्लामाला वन के आत्मकुर डिवीजन में हमारे पास 29 अवैध शिकार विरोधी बेस कैम्प हैं।"

- एम. पट्टाभि (नल्लामाला वन रेंज अधिकारी)

"इस क्षेत्र का मूल निवासी होने के नाते मैं 15 वर्षों से आत्मकुर बेस कैम्प में एक संरक्षण पर्यवेक्षक के रूप में काम कर रहा हूँ। अपने वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों का पालन करते हुए हम बाघों के विचरण क्षेत्रों और उनके पदचिह्नों की पहचान करते हैं, उनके पदचिह्नों की तस्वीरें लेते हैं और रेंजरों को यह जानकारी उपलब्ध कराते हैं। हम अपने माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आभारी हैं कि उन्होंने जंगल में बाघों की सुरक्षा के लिए की गई हमारी कड़ी मेहनत को पहचाना है।"

- चेन्नईया, वन संरक्षण पर्यवेक्षक, आत्मकुर बेस कैम्प

"अगर कोई अनजान व्यक्ति जंगल में प्रवेश करता है, तो हम तुरंत अपने उच्च अधिकारियों को इसकी जानकारी देते हैं। ऐसा करके हम बाघों की सुरक्षा में मदद करते हैं। बाघों की आबादी बढ़ने के साथ, हम संरक्षण पर्यवेक्षकों के रूप में अपने काम से बहुत खुश और गौरवान्वित हैं। हमारे प्रयासों को हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पहचाना और सराहा है, उनकी उत्साहवर्धक टिप्पणियों ने हमें नई प्रेरणा और उत्साह दिया है।"

- शिव शंकर, वन संरक्षण पर्यवेक्षक, कोथापल्ली बेस कैम्प

हर घर तिरंगा
प्रेम और गौरव का प्रदर्शन

'हर घर तिरंगा' अभियान अगस्त, 2022 में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य नागरिकों को अपने घरों में तिरंगा फहराने के लिए प्रोत्साहित करके भारतीय ध्वज के साथ व्यक्तिगत सम्बंध को प्रेरित करना है। परम्परागत रूप से, ध्वज के साथ हमारा सम्बंध औपचारिक और संस्थागत रहा है। सामूहिक रूप से तिरंगे को अपने घर तक लाना, राष्ट्रीय प्रतीक के साथ हमारे प्रगाढ़ व्यक्तिगत सम्बंध का सूचक है और इससे राष्ट्र निर्माण के लिए हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता का भी पता चलता है।

इस पहल का उद्देश्य लोगों में देशभक्ति की भावना जगाना और भारत के राष्ट्रीय ध्वज के बारे में गहन समझ को बढ़ावा देना है। इस साल हम इस अभियान को तीसरी बार मना रहे हैं। हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अपने 112वें 'मन की बात' कार्यक्रम में की गई अपील के बाद देश के विभिन्न हिस्सों से लोगों ने सेल्फी साझा करके और तिरंगा दौड़, तिरंगा बाइक रैली, .फ्लैश मॉब, नुक्कड़ नाटक आदि में भाग लिया।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Amit Shah @AmitShah

मोदी जी ने #MannKiBaat में बताया कि कैसे ड्रग्स के खिलाफ लड़ाई में 'MANAS' की शुरुआत एक बड़ा कदम है।

'MANAS' हेल्पलाइन- 1933 व पोर्टल ncbmanas.gov.in से जुड़कर rehabilitation व drugs से संबंधित अन्य जानकारियाँ NCB से साझा करें और 'नशामुक्त भारत अभियान' को मजबूत बनायें।

Translate post

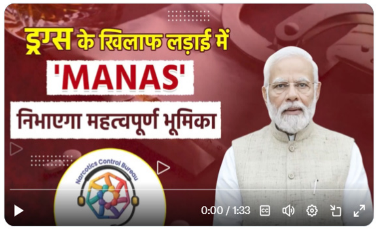

Archaeological Survey of India @ASIGoI

(1/2)
While appreciating the one-of-its-kind #ProjectPARI in promoting India's talented artists, Hon'ble PM Shri @narendramodi called Project PARI a great medium to bring emerging artists on one platform to popularise public art.

Himanta Biswa Sarma @himantabiswa

Thank you Hon'ble Prime Minister for lucidly explaining to the people about the significance of Moidam and for your support in ensuring it is enlisted as a World Heritage Site. Under your leadership, Assam's culture is gaining prominence on the global stage.

#MannKiBaat

Narendra Modi @narendramodi · Jul 28
Spoke about the Moidams of Assam and their cultural significance.
#MannKiBaat

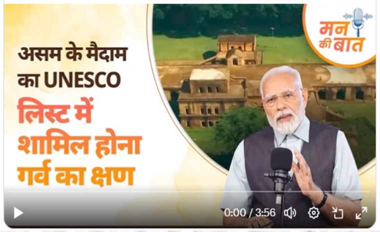

Dr Mansukh Mandaviya @mansukhmandviya

अभी कुछ दिन पहले स्वच्छता के लिए प्रसिद्ध इंदौर में एक शानदार कार्यक्रम हुआ। यहां 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम के दौरान एक ही दिन में 2 लाख से ज्यादा पौधे लगाए गए: माननीय प्रधानमंत्री श्री @NarendraModi जी

#MannKiBaat

Translate post

India in Sao Paulo @cgisaopaulo

Nossas mães e irmãs associadas ao 'UNNATI Self Help Group' de Rohtak em Haryana estão espalhando a magia das cores nas roupas com seu trabalho duro. Este esforço abriu novas portas de progresso para elas. #MannKiBaat @meaindia @mygovindia @indiainbrazil @PMOIndia

Translate post

IndiainSlovenia @IndiainSlovenia

In tge 112th #MannKiBaat programme, PM @narendramodi spoke about a very interesting campaign, the "Kulhadi Band Panchayat" of Ranthambor, Rajasthan.

@PMOIndia @moefcc

Mann Ki Baat Updates मन की बात अपडेट्स @mannkibaat · Jul 29
Replying to @mannkibaat
In yesterday's #MannKiBaat programme, PM @narendramodi spoke about a very interesting campaign, the "Kulhadi Band Panchayat" of Ranthambor, Rajasthan.
...
Show more

Naveen Goyal @NaveenGoyalBJP

'संगठन में शक्ति' का नया उदाहरण - रोहतक में हमारी माता और बहनों का 'UNNATI Self Help Group'
पूरे देश में बिखेर रही, हरियाणा की कला के रंग'
#Local #artindia #Hariyanaart #MannKiBaat

Translate post

Gautam Chakrabarty @GautamChakraba6

Today in Mann Ki Baat, Prime Minister @narendramodi Ji mentioned many important topics related to Assam, which made us very happy. He also mentioned the #UNESCO World Heritage status to #Charaideo_Maidam, which is a matter of happiness for us. I hope that in future he will mention more promising topics for Assam! #MannKiBaat

Himanta Biswa Sarma and 9 others

Handlooms,Textiles & Handicrafts Department,Odisha @HTH_Odisha

Famous #Sambalpuri saree of #Odisha, finds a special mention in Hon'ble PM Shri @narendramodi's 112th #MannKiBaat. He praised work of #Handloom artisans spread across every corner of #India & mentioned about #NationalHandloomDay on Aug 7.
#MyProductMyPride

From odishatv.in

Keshav Prasad Maurya @kpmaurya1

इस समय पूरी दुनिया में पेरिस ओलंपिक छाया हुआ है। ओलंपिक हमारे खिलाड़ियों को विश्व पटल पर तिरंगा लहराने का मौका देता है, देश के लिए कुछ कर गुजरने का मौका देता है।

आप भी अपने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाइए, #Cheer4Bharat.

-मा0 प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी
#MannKiBaat #IndiaAtOlympics

Translate post

Khadi India @kvicindia · Jul 29
Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji, in his recent #MannkiBaat episode, proudly spoke about the massive success of Khadi & Village Industries increasing its sales to 400% for the first time, crossing Rs. 1.5 lakh Crores.

#KVIC #Khadi
#KhadiRevolutionWithModi
#KhadiIndia

The CSR Journal @thecsrjournal

In his 112th 'Mann Ki Baat' address, PM Narendra Modi highlighted the growing concern about drug abuse in India and the government's efforts to combat it. He introduced the MANAS helpline (1933), a national toll-free narcotics helpline. This helpline provides information on drug rehabilitation, offers advice, and allows people to report drug-related issues confidentially. PM Modi urged the nation to utilize this resource to fight against drug abuse, emphasizing the need for collective action to address this menace.

#MannKiBaat #PMModi #DrugAbuse #StaySafe #GovernmentInitiative #HealthAndWellness #SocialCause

PMO India and 5 others

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

#MannKiBaat कार्यक्रम में इंटरनेशनल मैथ्स ओलंपियाड में अपने शानदार प्रदर्शन से भारत का नाम रोशन करने वाले विद्यार्थियों का हौसला बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी का अभिनंदन।

आदित्य, सिद्धार्थ, अर्जुन, कनव, रुशिल और आनंद पर पूरे देश को गर्व है। चार स्वर्ण और एक रजत पदक के साथ चौथा स्थान इस प्रतियोगिता में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। इन मेधावी बच्चों की उपलब्धियां और इनका अनुभव mathematics का डर ख़त्म करने के साथ हमारी युवा पीढ़ी को प्रेरित भी करने वाला है।

Translate post

Lalit Kala Akademi @LalitKalaLKA

प्रोजेक्ट परी पब्लिक ऑर्ट को लोकप्रिय बनाने के लिये उभरते कलाकारों को एक मंच पर लाने का बड़ा माध्यम बना है: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी

#MannKiBaat #ProjectPari #CultureUnitesAll #AmritMahotsav #MinistryOfCulture #lalitkalaakademi

Translate post

Gajendra Singh Shekhawat @gssjodhpur

आज प्रकृति संरक्षण दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा मन की बात में "कुल्हाड़ी बंद पंचायत" का उल्लेख किया जाना महत्वपूर्ण है।

वन्य जीवन के संरक्षण हेतु जंगल में कुल्हाड़ी नहीं ले जाने का जनसंकल्प प्रेरणादायी है। रणथम्भौर से शुरू हुई यह क्रांति संवेदनात्मक जागरूकता का भारतीय प्रतीक बन गई है। इससे जुड़े हरेक जन को मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

@narendramodi

#MannKiBaat

Translate post

खादी ग्रामोद्योग का कारोबार पहली बार डेढ़ लाख करोड़ रुपये के पार पहुंचा : मोदी

Fighting drug abuse priority for the nation: PM Modi

112th 'Mann Ki Baat' flags GOI concern over spread of drugs menace

Manas Helpline will help people, institutions tackle abuse firmly

Govt's proactive steps will prevent drug abuse: PM

Manas designed to mitigate substance abuse challenges

ଅଭିନନ୍ଦନ ଜଣାଇଲେ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି, ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ

ମନୁଙ୍କ ସହ ଫୋନ୍‌ରେ କଥା ହେଲେ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ମୋଦୀ

ନୂଆଦିଲ୍ଲୀ, ୨୮ ।୭: ପ୍ୟାରିସ ଅଲିମ୍ପିକ୍‌ସରେ କାଂସ୍ୟ ପଦକ ଜିତିଥିବା ମନୁ ଭାକରଙ୍କୁ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଦ୍ରୌପଦୀ ମୁର୍ମୁ ଓ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ନରେନ୍ଦ୍ର ମୋଦୀ ଅଭିନନ୍ଦନ ଜଣାଇଛନ୍ତି। ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଦ୍ରୌପଦୀ ମୁର୍ମୁ ଦେଶ ପାଇଁ ଅଲିମ୍ପିକ୍‌ସରେ ପ୍ରଥମ ପଦକ ଜିତିଥିବାରୁ ମନୁଙ୍କୁ ଶୁଭେଚ୍ଛା ଜଣାଇ ପଦାର୍ପଣରେ ତୁମ ସଫଳତା ଭାରତୀୟ ଯୁବ ପ୍ରତିଭାଙ୍କୁ ଅନୁପ୍ରାଣିତ କରିବ ବୋଲି କହିଛନ୍ତି। ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ମୋଦୀ ଏକ୍ସରେ ମନୁଙ୍କୁ ଶୁଭେଚ୍ଛା ଜଣାଇବା ସହ ଟେଲିଫୋନ୍ କରି ତାଙ୍କ ସହ କଥା ହୋଇଥିଲେ। ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ କହିଥିଲେ, ବହୁତ ବହୁତ ଅଭିନନ୍ଦନ। ଏହା ଏକ ଐତିହାସିକ ପଦକ। ଅଲିମ୍ପିକ୍‌ସରେ ସୁଟିଂରେ ପଦକ ଜିତିବାରେ ତୁମେ ପ୍ରଥମ ଭାରତୀୟ ମହିଳା। ଏହି ସଫଳତା ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର। ଟୋକିଓରେ ପିସ୍ତଲ ତୁମକୁ ଦଗା ଦେଇଥିଲା। ହେଲେ ଏଥର ତୁମେ ଦେଶର ନାମ ଉଚ୍ଚା କରିଛି। ଆଗକୁ ଆହୁରି ଭଲ ପ୍ରଦର୍ଶନ କର। ସେହିପରି କ୍ରୀଡ଼ାମନ୍ତ୍ରୀ ମନସୁଖ ମାଣ୍ଡଭିୟ, କ୍ରିକେଟ କିମ୍ବଦନ୍ତୀ ସଚିନ ତେନ୍ଦୁଲକର, ଭାରତୀୟ କ୍ରିକେଟ ଦଳର ପ୍ରଶିକ୍ଷକ ଗୌତମ ଗମ୍ଭୀର ପ୍ରମୁଖ ମନୁଙ୍କୁ ଅଭିନନ୍ଦନ ଜଣାଇଛନ୍ତି।

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में की सीएम योगी के 'बाघ मित्र' कार्यक्रम की तारीफ

ਖਾਦੀ ਦੀ ਵਿਕਰੀ 'ਚ 400 ਫੀਸਦੀ ਉਛਾਲ, ਕਾਰੋਬਾਰ ਡੇਢ ਲੱਖ ਕਰੋੜ ਤੋਂ ਪਾਰ : ਮੋਦੀ

ଡ୍ରଗ୍ସ ବିରୋଧୀ ଲଢ଼େଇ ସଫଳ କରିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ

ମନ୍ କୀ ବାତ୍

खादी की बढ़ती बिक्री से रोजगार के मौके : मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेडियो पर अपने मासिक कार्यक्रम मन की वात में वताया कि खादी की बिक्री में 400 फीसदी की वृद्धि हुई है। हैंडलूम उत्पादों की बिक्री भी बढ़ी है। इससे रोजगार के नए अवसर पैदा हो रहे हैं। ब्यूरो

Khadi Gramodyog's business crosses ₹1.5 lakh crore, says PM in *Mann Ki Baat*

Our Bureau
New Delhi

Prime Minister Narendra Modi

Prime Minister Narendra Modi on Sunday said that Khadi Gramodyog's business has crossed ₹1.5 lakh crore for the first time, which is due to 400 per cent increase in its sales.

Addressing the 112th episode of *Mann Ki Baat*, Modi lauded Tiger Day campaigns and reflected on Charaideo Moidam, a unique 700-year old mound-burial system of the Ahom dynasty of Assam that is being included under the category of Cultural Property at the ongoing 46th World Heritage Committee meeting.

The Prime Minister, ahead of National Handloom Day on August 7, said, "The rising sales of Khadi and handloom are creating new job opportunities in large numbers."

Modi highlighted the significant role of women in the handloom industry, mentioning how more than 250 women of Rohtak district in Haryana are benefiting, earning lakhs of rupees by making products in demand.

"Earlier, they used to run small shops and do minor work to make ends meet but everyone had a desire to move forward so they decided to join the Unnati Self Help Group and by joining this group, they got training in block printing and dyeing. Bed covers, saree and dupattas made by them have a huge demand in the market," he informed.

Modi encouraged people to buy khadi clothes and add it to their wardrobe collection. "On August 7, we will be celebrating National Handloom Day. You can also upload your local products on social media with #MyProductMyPride. Your small effort will change the lives of many people," he added.

TIGER DAY

In his monthly radio address, the PM discussed that Tiger Day will be celebrated all over the world on Monday. "In India, Tigers have been an integral part of our culture. In our country, there are many villages where there is no conflict between humans and tigers. But where such a situation arises, unprecedented efforts are being made for the protection of tigers there as well."

He mentioned about an interesting people's effort -- 'Kulhadi Band Panchayat' -- that has been started in Ranthambor in Rajasthan. "The local communities themselves have taken an oath that they will not go to the forest with axes and will not cut trees," he said.

He requested people to 'cheer for Bharat' to motivate Indian athletes participating at the Paris Olympics.

PM Modi Mentions Kani Shawls Of Kashmir In Mann Ki Baat

Says Khadi, handloom sales rising, business crosses Rs 1.5 lakh crore

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi on Sunday said that artisans in different parts of the country are engaged in making handloom popular and mentioned Kani Shawls of Kashmir.

He said Khadi Gramodyog's business has crossed Rs 1.5 lakh crore for the first time and asserted that the rising sales of Khadi and handloom were creating new job opportunities in large numbers.

In his Mann Ki Baat monthly radio broadcast, Modi said many people who would not be using Khadi products earlier now wear them with great pride. "The Khadi Gramodyog's business has crossed Rs 1.5 lakh crore for the first time. Do you know how much sales of Khadi have gone up, '400 per cent'. The rising sales of Khadi and handloom are creating new job opportunities in large numbers," he said.

"Mostly women are associated with this industry so they are benefiting the most," he added. "You must be having different types of clothes, and till now if you

See more ON P11

Khadi creating jobs, says Modi

Locals' efforts to save tigers lauded

Mann Ki Baat

मन की बात

ड्रग्स के खिलाफ लड़ाई में एक बहुत बड़ा कदम है 'मानस': मोदी

टोल फ्री नंबर **1933 पर** कॉल करके कोई भी व्यक्ति ले सकता है जरूरी सलाह

70 प्रतिशत बाघ भारत में, संख्या हर वर्ष बढ़ रही

भारतीय संस्कृति का गौरव बढ़ा रहे 'परी' कलाकार

खादी की बिक्री में 400 फीसदी की वृद्धि, कारोबार पहली बार डेढ़ लाख करोड़ के पार

ਨਸ਼ਿਆਂ ਨੂੰ ਜੜ੍ਹੋਂ ਉਖਾੜਨ ਲਈ ਕੇਂਦਰ ਸਰਕਾਰ ਵਚਨਬੱਧ-ਮੋਦੀ

ਓਲੰਪਿਕ 'ਚ ਹਿੱਸਾ ਲੈਣ ਵਾਲੇ ਖਿਡਾਰੀਆਂ ਦੀ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ ਹੌਸਲਾ ਅਫ਼ਜ਼ਾਈ

'ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਵਲੋਂ 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ''

खादी ग्रामोद्योग का कारोबार डेढ़ लाख करोड़ के पार पहुंचा : मोदी

■ नई दिल्ली (भाषा)।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि खादी ग्रामोद्योग का कारोबार पहली बार डेढ़ लाख करोड़ रुपए के पार पहुंच गया है तथा खादी एवं हथकरघा की बढ़ती बिक्री बड़ी संख्या में रोजगार के नए अवसर पैदा कर रही है।

■ देशवासियों से किया खादी के कपड़े खरीदने का आग्रह

आकाशवाणी पर प्रसारित अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 112वीं कड़ी में मोदी ने कहा कि जो पहले कभी खादी के उत्पादों का उपयोग नहीं करते थे, वह भी आज बड़े गर्व से खादी पहनते है। उन्होंने देशवासियों से खादी के कपड़े खरीदने का आग्रह भी किया। उन्होंने कहा, मुझे यह बताते हुए आनंद महसूस हो रहा है कि खादी ग्रामोद्योग का कारोबार पहली बार डेढ़ लाख करोड़ रुपए के पार पहुंच गया है। सोचिए, डेढ़ लाख करोड़ रुपए! और जानते है, खादी की बिक्री कितनी बढी है? 400 प्रतिशत। प्रधानमंत्री ने कहा कि खादी एवं हैडलूम उत्पादों की बढ़ती ब्रिक्री देश में रोजगार के नये अवसर भी पैदा कर रही है और चूंकि, इससे महिलाएं सबसे ज्यादा जुड़ी है तो सबसे ज्यादा फायदा भी उन्हीं को हो रहा है। अगस्त के महीने को आजादी का महीना करार देते हुए मोदी ने कहा कि लोगों के पास भांति-भांति के वस्त्र होंगे, लेकिन अभी तक उन्होंने यदि खादी के वस्त्र नही खरीदे है, तो वे इस साल से ही इनकी खरीदारी शुरू कर दें। उन्होंने कहा, अगस्त का महीना आ गया है। यह आजादी मिलने का महीना है, क्रांति का महीना है। इससे बढ़िया अवसर और क्या होगा खादी खरीदने के लिए। 'मन की बात' की इस कड़ी में प्रधानमंत्री ने मादक पदार्थो के सेवन से जुड़ी चिंताओं पर भी बात की। उन्होंने लोगों से भारत को नशा मुक्त बनाने की अपील की।

मन की बात

प्रधानमंत्री मोदी ने की इंदौर के पौधारोपण अभियान और महेश्वर की साड़ी की तारीफ

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने राजधानी के बरखेड़ी में कार्यकर्ताओं के साथ सुना मन की बात कार्यक्रम, जताया पीएम का आभार

प्रधानमन्त्रीৰ তৃতীয় কার্যকালৰ দ্বিতীয় 'মন কী বাত'

পেৰিছ অলিম্পিকত ভাগ লোৱা ভাৰতীয় খেলুৱৈক উৎসাহিত কৰিবলৈ দেশবাসীক আহ্বান

চৰাইদেউ মৈদামলৈ স্বীকৃতি, লাচিতৰ সুউচ্চ প্ৰতিমূৰ্তিৰ কথা ক'লে মোদীয়ে

বিশ্ব গণিত অলিম্পিয়াডত চমক দেখুৱা ৫ প্ৰতিযোগীৰ সৈতে বাৰ্তালাপ

15 اگست کے قریب آنے کے ساتھ ہی ترنگا مہم بڑھ جاتی ہے

ہر گھر ترنگا ابھیان 'ایک منفرد جشن بن گیا ہے: مودی

ഒളിമ്പിക്സിൽ പങ്കെടുക്കുന്നവർക്ക് ആശംസയുമായി പ്രധാനമന്ത്രി

Community-led efforts key to tiger conservation: PM

'Campaigns Saving Green Cover, Aiding Eco-Tourism'

BIG BOOST FOR BIG CATS

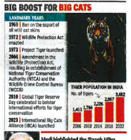

Khadi, handloom creating jobs in large numbers: PM

Prime Minister Narendra Modi on Sunday said Khadi Gramodyog's business has crossed ₹1.5 trillion for the first time and asserted that the rising sale of Khadi and handloom was creating new job opportunities in large numbers. In his monthly Mann Ki Baat radio broadcast, Modi said many people who would not be using Khadi products earlier now wear them with great pride. Mostly women are associated with this industry, so they are benefitting the most, Modi added.

PTI

Cheer for Olympic athletes, resume 'Har Ghar Tiranga' campaign: Modi

Urges citizens to buy khadi, informs about efforts of tiger conservationists in monthly address

VISIT MOIDAMS IN ASSAM

नवभारत

हैंडलूम के कपड़े जरूर खरीदें : मोदी

मन की बात में बोले

पीएम ने गणित ओलंपियाड विजेताओं को दी बधाई, कहा-ओलंपिक खिलाड़ियों का बढ़ाएं हौसला

'मानस' ड्रग्स के खिलाफ बहुत बड़ा कदम है

भारत का गौरव बढ़ा रहे हैं 'परी' कलाकार

खादी की बिक्री में 400 फीसदी की वृद्धि

बाघ हमारी संस्कृति का हिस्सा, विश्व के 70% बाघ हमारे देश में

ಡ್ರಗ್ಸ್ ಮುಕ್ತ ಭಾರತಕ್ಕೆ ಮೋದಿ ಕರೆ

ಮಾದಕ ವಸ್ತು ವಿರುದ್ಧ ಹೋರಾಡಲು ಮಾನಸ ಕೇಂದ್ರ | ಪ್ರಧಾನಿ ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್

ಖಾದಿ ವಹಿವಾಟು ದಾಖಲೆ: ಮೋದಿ ಸಂತಸ

खादीची कॉलर ताठ

व्यवसायाने दीड लाख कोटींचा स्तर पार केल्याची पंतप्रधानांकडून माहिती

PM mentions Rohtak's handloom industry in 'Mann Ki Baat'

खादी और हैंडलूम की बढ़ती बिक्री से बन रहे हैं रोज़गार के अवसर : मोदी

मन की बात

PM ने की प्रोजेक्ट 'परी' की बात

असम का चराईदेउ मैदाम क्या है, मोदी ने यह भी बताया

भारत को नशा मुक्त बनाने की अपील

بھارت میں ہینڈلوم کی صنعت قدیم صنعتوں میں سے ایک

'हर घर तिरंगा अभियान' एक अनोखा उत्सव बन गया है : नरेंद्र मोदी

अमर उजाला

'पीएम के 'मन की बात' कार्यक्रम में भुट्टिको के नाम का उल्लेख होना प्रदेश के लिए सौभाग्य की बात'

businessline.

Khadi Gramodyog's business crosses ₹1.5 lakh crore, says Modi in Mann Ki Baat

Business Standard

PM Modi urges nationwide use of MANAS Helpline in fight against drugs

ETV भारत

'Mann Ki Baat' Highlights: PM Appeals Citizens To Participate In 'Har Ghar Tiranga Abhiyan'; Cheers Olympians

हिन्दुस्तान

सभी बूथों पर सुना गया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात

IBC24

PM Modi Mann Ki Baat: मन की बात कार्यक्रम में PM मोदी ने की पौधरोपण की प्रशंसा, नागरिकों से किया पौधा लगाने का आव्हान

Jagran

Pilibhit Tiger Reserve : मन की बात में पीएम मोदी ने पीलीभीत टाइगर रिजर्व का किया जिक्र, बाघमित्रों का बढ़ाया उत्साह

Kashmir Horizon

Let's make India 'drugs-free', says PM in 'Mann Ki Baat'

लोकसत्ता

खादी विक्रीत वाढ ; 'मन की बात'मध्ये पंतप्रधानांची माहिती; रोजगाराच्या संधी वाढत असल्याचा विश्वास

mh1

प्रधानमंत्री मोदी ने 'Mann Ki Baat' में हरियाणा के हथकरघा निर्माताओं की सराहना की

oneindia

Mann Ki Baat: 'नशे के लिखाफ लड़ाई में Tele MANAS निभाएगा अहम रोल', PM मोदी ने की खास अपील

સંદેશ news

Mann Ki Baat: **પ્રોજેક્ટ પરી અને માનસનો PMએ કર્યો ઉલ્લેખ,જાણો શું છે?**

The Sentinel
of this land, for its people

Mann Ki Baat: PM Modi urges people to visit Charaideo Maidam, speaks on host of issues

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार